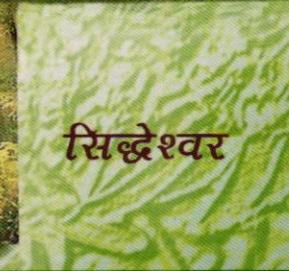
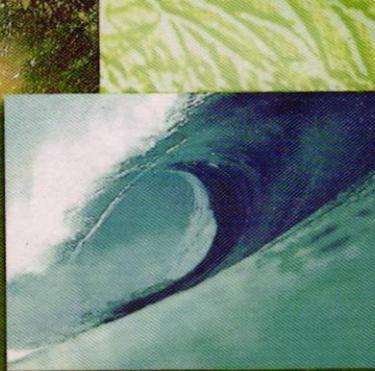
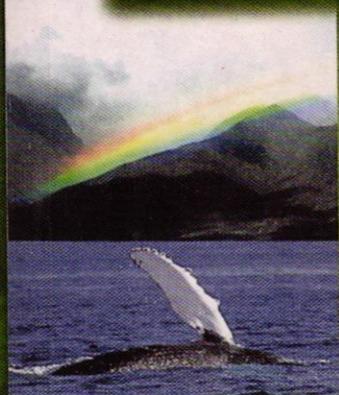
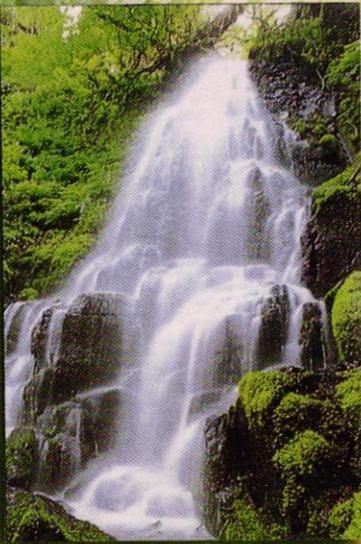


पतझंग की आँदा



सिल्वेश्वर

पतझर की साँझ

हाइकु
काव्य-संग्रह

सिद्धेश्वर

झांसि कि प्राष्टान

प्रकाशनी

निष्ठाकार इन्डिया लिंग प्राष्टान : काष्ठाकार
१०० ००८-४८३८ प्रयुक्ति प्र० १७५५

बच्ची प्रसाद

प्रकाशनी : ○
 सदैव सुख एवं दुःख में
 मेरी अद्विग्नी बनकर
 जो हर कदम पर
 उन्हीं को सप्रेम कर
 मेरे साथ हैं
 उन्हीं को समर्पित

प्रिया ००१ : प्रत्यौ

लिखनी इतिहास : इतिहास
 १-४८३८ प्रयुक्ति प्र० १७५५
 सिद्धेश्वर

प्राप्ति विवरण : इसका दाम ₹ 100.00
 रुपये १०० रुपये १०० रुपये १००

पतझार की साँझ

सिद्धेश्वर

प्रकाशक : सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001
दूरभाष : 0612-228519

© : सिद्धेश्वर

प्रथम संस्करण : 1998

कम्पोजर : कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट
फ्रेजर रोड, पटना-800 001

मुद्रक : प्रोलिफिक इनकॉरपोरेटिड
ओखला, फेस-दो, नई दिल्ली-110020

मूल्य : 100 रुपये

सौजन्य : राष्ट्रीय विचार मंच
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

Patjhar Ki Sanjh : Hyku poems by Sidheshwar

Rs. 100.00

हाइकु में तीन-चार पंक्तियों में प्रकृति या मनुष्य का एक मुकम्मल चित्र प्रस्तुत किया जाता है। उस चित्र में पूरी चुस्ती होनी चाहिए, वर्णा वह प्रभावशाली नहीं होगा। अकारण नहीं कि अज्ञेय जी के सारे हाइकु छंद की लय और गति से युक्त थे। बाद में जो हाइकु लिखे गए, उनकी नोटिस इस कारण नहीं ली गई कि उनकी रचना के पीछे कोई सर्जनात्मक दबाव सक्रिय न था।

मैं तो भूल ही गया था कि हिन्दी कविता में कभी हाइकु भी लिखे गए थे। इधर एकाध कवि का पूरा हाइकु संग्रह को देखने का मौका मिला, तो पुरानी घटना याद आ गई। उसी क्रम में मेरे सहपाठी सिद्धेश्वर जी ने अपने हाइकु का बृहत् संग्रह मुझे अवलोकनार्थ दिया, तो मैं शुरू से अंत तक इसे देख गया, बहुत ही उत्सुकता के साथ, कि शायद इसमें हाइकु के कुछ नए आयाम प्रकट हुए हों।

सिद्धेश्वर जी के हाइकु प्रकृति या मनुष्य तक सीमित नहीं हैं। मनुष्य की समग्र गति-विधि को समेटने में वे मनुष्य का बहुत व्यापक रूप लेकर चलते हैं। इस तरह मानना चाहिए कि उन्होंने हाइकु के

साथ विषय की जो सीमा थी, उसे तोड़ दिया है और उसे बहुत ही मुक्त रूप में स्वीकार किया है। दूसरी बात यह है कि उन्होंने छंद और लय को भी गैरजरूरी समझा है। मनुष्य की वाणी में जो विशिष्ट है, वह कविता है, वह छोटी हो या बड़ी। इस तरह उनकी कविता की परिभाषा बहुत विस्तृत है। उसमें पूरे जीवन क्या, पूरे विश्व के लिए जगह है, और बिना किसी बनाव-सिंगार के।

मेरी बात एक-दो उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगी। उनका एक हाइकु है :

‘लहर पर
मचलती चाँदनी
मछली जैसी’

इसे तो उन्होंने निस्संकोच अपने संग्रह में शामिल किया ही है, ऐसे हाइकु भी उसमें बड़ी संख्या में हैं :

‘वक्ता नहीं है

द्विवेदी जी-सा कोई

गीर्घि निष्ठु उपर में हाली आज हिन्दी में

जरूरी नहीं कि फैशन में लिखी गई चीजें किसी साहित्य को समृद्ध करें। ग़ज़ल, सोनेट आदि सभी विदेशी काव्य-रूप हैं, पर इन्होंने हिन्दी कविता को समृद्ध किया है। मेरी कामना है कि सिद्धेश्वर जी के हाइकु पाठकों और विद्वानों को पसंद आए और वे हिन्दी कविता में उनकी देन माने जाएं।

लखनचंद कोठी

नंद किशोर नवल

गुलबी घाट, महेन्द्र

विश्वविद्यालय प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

पटना-800 006

पटना विश्वविद्यालय

9 अक्टूबर, 1998

पटना-800 005

अपनी ओर से इकाई के मृग प्रहर में
लिया है। इत्क मानव एक कपड़ी प्रौढ़ लेपेड़ शाह राजा और इसकी
जिस प्रकार मानव, उसका स्वभाव, उसकी स्थिति तथा
समस्याएं दिन-प्रतिदिन बदलती जाती हैं उसी प्रकार साहित्य में भी
परिवर्तन आते रहते हैं। उसमें नए-नए विचार, नए विधान, नई विधाओं
तथा नई समस्याओं का समावेश होता रहता है। जब विज्ञान मानवीय
बुद्धि के प्रसार में बद्धमूल जीवन को एक विशेष दिशा की ओर मोड़
रहा है तब साहित्य इस सामूहिक प्रक्रिया से अलग कैसे रह सकता
है?

विज्ञान में 'कम्प्यूटर' की तरह साहित्य के क्षेत्र में 'हाइकु' भी
जापान की देन है। यह जापानी पद्य शैली की एक आक्षरिक छन्द
प्रणाली है। अक्षरों की गिनती की सहज काव्य-विधा है हाइकु।
पाँच-सात-पाँच वर्णों के क्रम में त्रिपदी-सत्रह वर्णों 'हाइकु' एक ऐसी
विधा है जिसमें कम से कम शब्दों में पाठकों के समक्ष अपने भाव को
व्यक्त कर दिए जाय। 'हाइकु' का जापानी शास्त्रिक अर्थ-'नटभंगी' है
या जल्दी की कविता। विश्व कविता में तेजी से हो रहे परिवर्तनों-परिवर्द्धनों
के साथ अंग्रेजी ने इसे अपने में पचा लिया और फिर अंग्रेजी के
माध्यम से ही हाइकु का प्रवेश विश्व की अन्य भाषाओं के साथ-साथ
हिन्दी भाषा में हुआ। आज हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं
में 'हाइकु' की अनुगूंज सुनाई पड़ रही है तथा उसमें प्रतिष्ठित हो रही
है।

आज के इस आपाधापी के युग में आम आदमी खासकर
निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवार जीवन संघर्षों, जटिलताओं एवं अनेक
समस्याओं के बीच साहित्य के अपने पठन-पाठन का वक्त रोटी,
कपड़ा और मकान के निदान में लगाने को विवश है। इस भागमभाग
की स्थिति में उसका ध्यान अब बड़ी-बड़ी कहानियों, उपन्यास तथा
लम्बी कविताओं के बजाय लघु कथाओं तथा छोटी कविताओं की
ओर उन्मुख होना स्वाभाविक है। अतएव आधुनिक जीवन की तेजी
से बदलती हुई परिस्थितियों में आज समय की मांग है कि साहित्य

में नए युग के अनुकूल कम से कम शब्दों में अपने भावों को समाहित किया जाय जो एक साथ दर्पण और दीपक का काम करे। इसके माध्यम से जीवनगत विचारों के सह-अस्तित्व से वर्तमान सभ्यता और संस्कृति को बचाया जा सकता है। इसके लिए पूरब और पश्चिम के सभी प्रगतिशील साहित्यिक मानदण्डों एवं विधाओं को समीकृत करना होगा। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर इस कृति की रचना की गयी है।

जापान के सुप्रसिद्ध कवि मात्सुओ बाशो (1644-1694) ने हाइकु को काव्य विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की। 17वीं शताब्दी से लेकर आज तक इन चार शताब्दियों में हाइकु जापान के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। और जैसा कि मैंने पूर्व में कहा, आज हाइकु जपानी साहित्य की सीमाओं को लांघ कर विश्व-साहित्य की निधि बन गया है। अन्य विधाओं के समानान्तर कदमताल कर रहा है, इस विधा की आज हिन्दी में जो संतोषप्रद स्थिति है उसके लिए हिन्दी के जिन सुप्रसिद्ध साहित्यकारों का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है उनमें सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', त्रिलोचन शास्त्री, डॉ. सत्यभूषण वर्मा, डॉ. सुधा गुप्ता, डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, प्रो. आदित्य प्रताप सिंह, उर्मिला कौल, डॉ. मनोज सोनकर सहित डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक के नाम उल्लेखनीय हैं। अहिन्दी भाषी क्षेत्र उड़ीसा में हिन्दी के प्रचार के लिए पच्चीस लाख रूपये की पुस्तकों वाले विद्या मंदिर ग्रन्थागार के संस्थापक डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक जापान से आयी इस काव्य विधा पर सराहनीय कार्य के लिए बहुत चर्चित रहे हैं। हाइकु की त्रौमासिक पत्रिका 'गुंजन'- के संपादक की हैसियत से इस विधा के संवर्द्धन में वे सदैव तल्लीन हैं। देवनागरी में लिप्यांतरित विश्व भर की भाषाओं को हाइकु-काव्य मंच की ओर से प्रकाशित पत्रिका 'हाइकु भारती' के मानद संपादक डॉ. भगवतशरण अग्रवाल का अवदान इस विधा को समृद्ध करने में उल्लेखनीय है। सच कहा जाय तो मुझे इसे विधा पर अपनी कलम चलाने का श्रेय इन्हीं दो प्रबुद्धजनों को जाता है। जिस प्रकार 'गुंजन' के माध्यम से

मैं डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक के सान्निध्य में आया, उसी प्रकार अपनी 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के जरिए डॉ. भगवतशरण अग्रवाल के सम्पर्क में। डॉ. नायक तथा डॉ. अग्रवाल ने क्रमशः 'गुंजन' तथा 'हाइकु भारती' में मेरी हाइकु कविता प्रकाशित कर मुझे प्रेरित किया। सर्वप्रथम 'गुंजन' में मेरी कविताएं छर्पीं। फिर प्रतापगढ़ (उ.प्र.) से नवसृजन की साहित्यिक त्रैमासिक 'प्रतापशोभा' के हाइकु विशेषांक में इन कविताओं को प्रकाशित कर इसके संपादक प्रदीप नारायण सिंह ने मेरा मनोबल बढ़ाया। इसके अतिथि संपादक डॉ. नायक थे।

प्रथम (1) छापछ त्रि शिक्कु (2) छान्नि छु नान्नि (3) काण्ठुपछ
कालहर पर त्रु के छापछ है निहारता क लाल प्रगूंज रहा है कान्ध
मचलती चाँदनी नाव से सैर वाला लालमी कहीं मेरे भीतर डनि
मछली जैसी दोनों किनारा प्रणय गान
कपु मिलु (4) प्राप के त्रिय इक्कु (5) शिक्काप्र कान्धानाम
छिनाम कि फटा चादर दोष क्यों दूँ जर खेमसु मिय
ए प्रक त्रु जिस्म बेकसूर है निय प्रतदीर के आगे छिकु कि छान्धि
कींकु इ द्वामजबूरी से लाल लाली तकदीर को निक दिय। तुँ तुँ
एकी छापछ कि निजाम में प्रल सह इस न इति कि छिकु त्रु निरीक
डॉ. भगवतशरण अग्रवाल ने 'हाइकु भारती' पत्रिका में मेरी
इन कविताओं को स्थान प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया।

कींकु (1) लालम लालि मान्नि (2) क छान्नि-छिन्नि त्रि (3) शिक्काप्र
ई एक गोरैया देश के प्रति छुक्कु हाशिए पर लालम
बैठी है चुपचाप आज भी उदासीन आज भी महिलाएं ब्र
वातायनी में प्रबुद्ध जन । राजनीति में

त्रुहि कि नामिक शिकु कुछात प्र (4) के लोक लालुपछ है
जिस कान्धाप्र छुक्कु त्रु में भूल गए हैं जिस निरीक्षित कि छुक्कु के
कान्धाप्र। ई लालम त्रि सारे सूत्र, नेता ही लाल कान्धाप्र क लाल
ब्रांध ई लाल मन्नि कि लाल नैतिकता के छुक्कु लालुन्नि जिस

इन सुपरिचित हाइकुकारों की प्रेरणा पाकर जब हमने लगभग एक हजार हाइकु कविताओं की रचना की, तब उसे लेकर मैं नई दिल्ली गया जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के जापानी भाषा विभाग के प्राध्यापक डॉ. सत्यभूषण वर्मा के पास। उन्होंने न केवल इन सारी कविताओं का आद्योपांत अवलोकन किया, बल्कि मार्गदर्शन तथा दिशा-निर्देश के साथ-साथ प्रेरणा के दो शब्द लिखकर मुझे इस बात की हिदायत दी कि इस हाइकु-संग्रह की छपाई सुन्दर ढंग से हो। मैं भाव-विभोर हुआ डॉ. वर्मा की हार्दिकता एवं स्नेह को पाकर। उपर्युक्त तीनों विद्वान एवं चर्चित हाइकुकारों की उदारता के लिए उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ इस विश्वास के साथ कि उनका स्नेह मुझे आगे भी मिलता रहेगा।

मेरी सामाजिक प्रतिबद्धता संघर्ष के अनुभवों का परिणाम है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहने के कारण अनुभवों ने मुझमें एक ऐसी सामर्थ्य प्रदान की जिससे मैंने सामाजिक परिवेश की मानवीय पीड़ा को बखूबी समझा, परखा और अपने लेखन में अभिव्यक्त कर पा रहा हूँ। मेरी कविताओं में सामाजिक चेतना उभर कर आई है क्योंकि शोषितों, दलितों की पीड़ा ने मुझे इस रूप में सोचने को बाध्य किया है। इसलिए लेखन-शैली की उत्कृष्टता की अपेक्षा लेखन-विषय की गुणवत्ता को मैं अधिक महत्व देना पसन्द करता हूँ और सामाजिक सरोकारों को ही लेखन-विषय का सर्वोत्तम स्रोत मानता हूँ क्योंकि समाज के करीब में रहकर उसके लोगों को मैंने नजदीक से पढ़ा है और उनकी पीड़ा को देखा है। इसलिए मेरे शब्द और कर्म एक दूसरे से अनुप्राणित होते हैं।

डॉ. सत्यभूषण वर्मा के अनुसार हाइकु कवि कविता को जीवन के सत्य की अभिव्यक्ति मानता है। हाइकु में वह सत्य तथ्यात्मक सत्य अथवा काव्यात्मक सत्य दोनों में से कोई भी हो सकता है। तथ्यात्मक सत्य अनुभूत विषय के यथातथ्य चित्रांकन को जन्म देता है और

काव्यात्मक सत्य कवि हृदय की प्रतिक्रिया अथवा अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। उस क्षण को कवि ने कितनी गहराई से अनुभव किया है और उसे कितनी क्षमता के साथ वह व्यक्त करने में समर्थ है यही हाइकु कविता की सामर्थ्य है। बाशो की एक प्रसिद्ध कविता है—

हिन्दी प्रकाशन से लाइ निप्पन ब्राइ ड्रॉप | हिन्दी लाइ निप्पन
जापानी

फुरु इके या	ताल पुराना
काबाजु तो बिकोमु	कूदा दादुर
मिजुनो ओतो	पानी की आवाज

डॉ. वर्मा ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि अपनी कुटिया के पास बने तालाब के किनारे एकान्त चिन्तन में ढूबा कवि अचानक घास से भरे तट से उस शान्त तालाब में कूदते हुए मेढ़क के द्वारा जल में जो हल्की आवाज होती है, उससे कवि के मन में उठे उन्मेष से उसकी एक अनुगूंज उसकी चेतना में उठती है और अनुगूंज के उस क्षण को वह उपर्युक्त शब्दों में बांध देता है।

जापान के प्रसिद्ध हाइकु कवि बाशो के अनुसार हाइकु सम्पूर्ण कविता नहीं है, वह विराट सत्य की ओर इंगित करने वाली सांकेतिक अभिव्यक्ति है। शब्द-संयम हाइकु की अनिवार्यता है, लघु आकार में भाव-संयम शब्दों की मितव्ययिता और सांकेतिक अभिव्यंजना हाइकु की अनिवार्य आवश्यकता बन जाती है। इसके साथ ही भाव-संयम भी। कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में, हाइकु कविता गुलिर मध्ये जे केवल वाक्-संयम ता नय, एर मध्ये भावेर-संयम। शब्दों में जो कहा गया है, वह संकेत मात्र है, शेष पाठक की कल्पना और ग्रहणशक्ति पर छोड़ दिया जाता है। हाइकु का कवि निष्कर्ष नहीं देता। वह जितना कहता है, उससे कहीं अधिक अनकहा छोड़ देता है और वह अनकहा उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, जो कह दिया गया है। इस प्रकार हाइकु शब्द की साधना की कविता है।

जापानी वर्णों का अनुवाद क्रम संख्या चाहे अनूदित हो पा रही हो या नहीं, पर आज हिन्दी में यह वर्ण संख्या 5-7-5 के क्रम में स्थिर हो चुकी है। इसमें अर्द्धवर्णों की गणना नहीं की जाती। हाइकु की तीनों पंक्तियाँ एक दूसरे की पूरक होकर एक समन्वित प्रभाव की अन्विति में सहायक होती हैं। कोई शब्द अपने स्थान से हटाकर कहीं अन्यत्र रखने पर पूरा अर्थ बदल जाएगा।

हाइकु के साथ एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके साथ प्रकृति का गहरा संबंध है। प्रकृति-चित्रों की सजीवता कविता से जुड़ी रहती है। प्रायः हाइकु की एक पंक्ति में प्रकृति का उल्लेख होता है पर यह आवश्यक नहीं।

डॉ. भगवतशरण अग्रवाल के मतानुसार हाइकु में हाइकुकार अपने आत्मसंघर्ष और मनोमंथन के असाधारण क्षणों के सत्य को अथवा किसी विशिष्ट अनुभूति को प्रकृति एवं जीवन के सौन्दर्य को फोटोग्राफर के रूप में नहीं चित्रकार के रूप में व्यक्त करता है। इसलिए उन क्षणों का सत्य, सर्वकालीन एवं देश विदेश की सीमाओं से परे का सत्य होने के कारण, सम्प्रेषणीयता की क्षमता से भरपूर होता है पर उसे सत्रह अक्षरों में बांधना उतना ही कठिन। इसलिए जापानी हाइकु के कथ्य और शिल्प का अनुशीलन कर उसके कथ्य का भारतीयकरण करके अर्थात् अपने देश की ही सांस्कृतिक-सामाजिक परम्पराओं की पृष्ठभूमि और आज के परिवेश में व्यक्त करना और शिल्पगत लक्षणों को जहाँ तक संभव हो, जापानी हाइकु के गुणधर्मों के अनुसार रखना अधिक समीचीन होगा। खुली प्रकृति, पूरा समाज और पूरा संसार हाइकु का शिविर है। इसका कोई जीर्ण-संकीर्ण खेमा-खूंटा नहीं। भारतीय भाषाओं में अनेक कवि हाइकु शैली में अभिव्यक्ति के नए प्रयोग कर रहे हैं।

हाइकु का एक और अन्य रूप है सैन्यू। सैन्यू भी तीन पंक्तियों की 5-7-5 वर्णक्रम की 17 वर्णों कविता है। जहाँ 'हाइकु' जीवन और प्रकृति के कार्य व्यापारों की भावात्मक अभिव्यक्ति की कविता है वहीं

सैन्यू मनुष्य की दुर्बलताओं अथवा दुर्बल क्षणों पर व्यंग्य अथवा पैरोडी है। कहने का तात्पर्य यह है कि हाइकु में प्रकृति महत्वपूर्ण है और सैन्यू में मनुष्य। मानवीकरण की प्रवृत्ति सैन्यू में अधिक मिलती है। इस सन्दर्भ में यह कहना प्रासांगिक होगा कि इन्हीं प्रकृति-चित्रों को लेकर अपनी इस प्रथम 'हाइकु' काव्य-कृति को आप सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए, वस्तुतः मैं एक अपार आतंरिक आहलाद की अनुभूति का अनुभव कर रहा हूँ। संभव है मानवीकरण की प्रवृत्ति या यों कहें कि सैन्यू कविताओं के संग्रह के साथ मैं दूसरे पड़ाव पर आपसे मिलूँ। बहरहाल हाइकु की इन कविताओं में प्रकृति, साहित्य, संस्कृति, हिन्दी, कविता, शृंगार, राष्ट्र चेतना, वेदना तथा पर्यावरण विषयों पर अपने भावों को अभिव्यक्त करने का मैंने प्रयास किया है।

हाइकु कविताओं को पाठकों तक परोसने में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है यह तो सुधी पाठक ही बताएंगे, पर मुझे इतना विश्वास है कि आज के इस कसमकस माहौल में जब लोग लंबी कविता, कहानी, अथवा उपन्यास पढ़ने की ओर अपना समय नहीं निकाल पा रहे हैं, हाइकु की मेरी ये कविताएं संभवतः उनका ध्यान आकृष्ट कर उनके मन को जीतने में सक्षम हों तथा हमारे मन के भावों को ग्रहण कर सोचने को मजबूर भी। हमारे इस प्रयास से पाठकों को थोड़ा भी मानसिक खुराक मिल सके तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

निःसन्देह युग-धर्म के बदलने पर काव्य के संकेत बदलते हैं, भाषाओं का रूप बदलता है, व्याकरण के नक्शे बदलते हैं और छंद के बंध टूटते हैं। पर मानवीय संवेदनशील भावनाएं कभी नहीं बदलतीं, बदलती हैं बौद्धिक दिशाएं। जैसा कि मैंने पूर्व में कहा कि हमारी ये अनुभूतियाँ जीवन की विभिन्न स्थितियों की ही उपज हैं। हमारे मन के भाव जागृत होकर शिलीभूत हुए हैं इन रचनाओं में, जो समाज के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद के ताने-बाने से बने हुए हैं और जिसमें समाज का स्पंदन है। इस सन्दर्भ में हम इस बात से सहमत हैं कि विश्वसनीयता के गुण होने पर ही कोई रचना पाठकों से अपना स्थायी सरोकार बना पाती है। अतएव इस विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि रचनाएं यथार्थ से जुड़ी हों ताकि वे समय

और समाज को कुछ दे सकें। सच तो यह है कि लेखक भी वही सार्थक है जो जीवन की जटिलताओं को अपने नयनों से देख यथार्थ को लिपिबद्ध कर सके। रचनाकारों के इस तरह के प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते। सांकेतिक प्रतीकों के माध्यम से जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति हाइकु को सार्थकता प्रदान करती है।

इस काव्य संकलन के प्रणयन, पांडु-लेखन एवं उसके परिमार्जन में हमारे अग्रज-कविवर गोपी वल्लभ सहाय, आकाशवाणी, पटना के पूर्व केन्द्र निदेशक श्री बांकेनन्दन प्र. सिन्हा तथा बिहार प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं साहित्य-सेवी श्री राय प्रभाकर प्रसाद, मार्ग-दर्शक प्रो० रामबुझावन बाबू और हिन्दी विभाग, आर.आर.एस. कॉलेज, मोकामा (पटना) के प्राध्यापक डॉ. शिवनारायण की आत्मीयता मिली है जिनकी सद्भावनाओं के लिए उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

सुपरिचित साहित्यकार तथा अपर उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव ने सहज भाव से इसकी भूमिका लिखकर मुझे अनुप्राणित किया है। मैं अनुगृहीत हूँ उनकी इस उदारता के लिए।

यह कहने में मुझे तनीक संकोच नहीं कि बिहार के महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-I, पटना, श्री नन्दलाल ने भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की ओर से अपेक्षित सहयोग प्रदान कर अपनी जिस हार्दिकता का परिचय दिया है, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

हमारे सहपाठी तथा हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं-विशेष रूप से आधुनिक कविता के सुपरिचित समीक्षक डॉ. नन्द किशोर नवल, विश्वविद्यालय प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय ने इस संग्रह पर अभिमत प्रदान कर न केवल मुझ पर अपना स्नेह दर्शाया है वरन् हाइकु विधा की गरिमा को बढ़ाया है। मैं हृदय से आभारी हूँ उनका।

सिद्धेश्वर

‘बसरा’
पुरन्दरपुर, पटना-1

22 अक्टूबर, 1998

मूमिका

जब भी कविता की बात होती है मुझे आदरणीय डा. जगदीश गुप्त की पंक्ति याद आती हैं कवि वही जो कुछ अकथनीय कहे....। विधा कोई भी हो यदि कविता में अकथनीय कह सकने की सामर्थ्य है तो वह निश्चित रूप से हमारी संवेदनशीलता को स्पर्श करती है।

श्री सिद्धेश्वर जी के काव्य संग्रह 'पतझर की सांझ' की कविताएं हाथ बढ़ा कर हमारे दुखते मन के ज्वालामुखी को छू लेती हैं और जीवन के अनेक प्रश्नों से साक्ष्य करा देती हैं। इस संग्रह का धरातल शायद आकाश की भाँति असीम है जहाँ प्रकृति से लेकर पर्यावरण तक और वेदना से लेकर संस्कृति तक हर कहीं कविता की स्पष्ट अनुगूंज सुनाई देती है। कविता लिखना और उसके माध्यम से श्लाघ्य आदर्श स्थापित करना एक अलग बात है किन्तु कविता की मूल प्रकृति को जी पाना एक अत्यन्त दुर्लभ बात है। सिद्धेश्वर जी अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल इस सच को उद्घोषित करते हैं, वरन् जो उन्हें निकट से पहचानते हैं वे यह भी जानते हैं कि वह अपनी कविता एक-एक पल जीते हैं। ऐसे ही कवि का यह कथन हमें भीतर तक हिला देता है और आत्मचिंतन करने को विवश कर देता है -

ज़रूरी होता

होने के लिये कवि

आदमी होना।

इसका मूल कारण है - मंचीय प्रशंसा पाने की अदम्य लालसा और पेशेवर कविता के लटकों-झटकों से कोसों दूर खड़े इस कवि की सहज काव्यानुभूति और मानवीय परिवेश के रेशे-रेशे को अपने चिंतन का हिस्सा बनाना; ऐसा ही कवि कह सका है -

मानव एक

कविता का पहला

प्रतिमान है।

इस संग्रह की कृतियों में प्रकृति के बिखरे संसार के अनेक चित्रों के माध्यम से न केवल उसकी जीवंतता के स्वर मुखर हुये हैं वरन् वर्तमान जीवन की विसंगतियों और विवशताओं की प्रतिध्वनि भी सुनाई देती है। यदि

तपती धूप

तरसती पानी को

रेगिस्तान में

हाशियों पर टंगे हुए हमारी संवेदनाओं के आत्म-कथयों की चुभन दे जाती है तो सीचते खेत

सूरज की किरणों

पड़ा है सूखा

प्राकृतिक आपदाओं की त्रासदी में मानवीय पीड़ाओं की खरकन दे जाती है। कवि टूटते हुये मूल्यों और विघटन की ओर सरकती मर्यादाओं वाले समाज और संस्कृति के प्रति पूर्ण सजग है और सच्चे मन से चाहता है कि संस्कृति को खाने वाले घुन का विनाश हो सके। किन्तु वेवाक सच्चाई यही है कि

खो चुके हैं

राष्ट्रीय स्वाभिमान

हम सब

और

चौराहे पर

खड़ा है राष्ट्र आज

अनिर्णय के।

इस संकट की घड़ी में भी कवि आशान्वित है कि एक सच्ची कोशिश फिर से जन-जन में चेतना भर सकती है और शायद दुख-दर्द भरी यह दुनियां एक बेहतर जगह बन सकती है।

जहाँ गूँजेंगे

उसके भीतर भी

प्रणय-गान।

कुल मिला कर यह 'कविता संग्रह' मानवीय सरोकारों और सामाजिक संदर्भों के बहुत निकट है जहाँ जीवन अपनी सारी विद्रूपताओं, विरोधों और विवशताओं के साथ हमारे सामने आता है, किन्तु कवि की दृष्टि आशावादी है, इसीसे कविताओं का मूल स्वर हमें उद्देलित करता है और लीक से हट कर कुछ करने को प्रेरित करता है।

आशा है यह कृति साहित्य जगत में अपना स्थान बनायेगी।

गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव

अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक

डी-1/301, बापूधाम,

फान मार्ग, नई दिल्ली

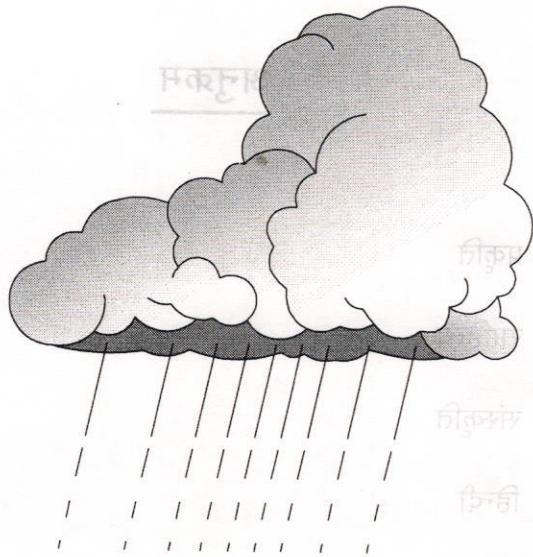
25 नवम्बर, 1998

अनुक्रम

पृष्ठ

	पृष्ठ
1. प्रकृति	18
2. साहित्य	32
3. संस्कृति	40
4. हिन्दी	46
5. कविता	51
6. शृंगार	64
7. राष्ट्रवेतना	77
8. वेदना	89
9. पर्यावरण	101

डिज़िन निष्ठापन
के द्वारा प्रकाशित
सिर्फ इन्डिया



प्रकृति

आसान नहीं
गहरे सागरे को
जानना दोस्तो

प्रकृति

(8) तिनि छापन
कि राज मि निश्चाँह
सिंहासन

(1) इठलाती है
धरती भी मोर-सी
पावस में ही

(9) तिनि रहि
मि निश्चाँह प्रकृति
राज कि निन

(2) गा रहे लोग
लहरों के ताल में
प्रकृति-राग

(10) एष उड़ान
निश्चाँह तिनि सम
सिंहि तिनि

(3) सीखना चाहो
तो सागर लहरों
से सीखो यारो !

(11) एष उड़ान
प्रभ राष्ट्र के राज
तिनि प्रजामन

(4) राष्ट्रम ऋचा
प्राची में प्रस्फुटित
नमन करो

(12) तिनि राज्ञि
मि निश्चाँह प्रभ-मूर
तिनि तिनि

(5) फूटती धारा
सावन की नदी की
तृप्ति किनारा

(6) निहारे भू को
आसमान से चाँद
शीतल आँखों

(6) तिनि समृद्धि
तिनि राजा का दृष्टि
उड़ान तिनि

(7) प्रभ तिनि
कि निनि तिनि
मि निनि

(7) छवि उभरी
हरी पत्तियों पर
सूरज उगा

(8) चिकुर
मचल रही
चाँदनी भी रात की
सागर-तले

(9)
रही तैरती
उतर चाँदनी भी
नदी की धार

प्रांत छोड़ गा
कि नाह के लिहाज
गग्न-चिकुर

(10)
है सुनहरा
रेत के कणों पर
समंदर ही

प्रांत मध्ये
चिकुर के लिहाज
छिकुर मध्ये

(11)
टिका हुआ है
भू-पर जीवन भी
प्रकृति से ही

कि पूरे शहरी
जाँच कि लालाए
छिप्पे लालाए

(12)
तपती धूप
तरसती पानी को
रेगिस्तान में

कि चिकुर
मि-प्रांत कि लिहाज
कि लिहाज

(13)
लहर पर
मचलती चाँदनी
मछली जैसी

कि चिकुर
प्रांत प्रांत कि
कि लिहाज कि

(14)
है निहारता
नाव से सैरवाला
दोनों किनारा

कि लिहाज
कि लिहाज
कि लिहाज

(15)
घुमड़ते हैं
आकाश में बादल
बुलाते वृक्ष

कि लिहाज
कि लिहाज
कि लिहाज

- (15) प्रारंभ हुई
हँड़ीजि में आकाश
रहि गिरक
- (16) देखी हमने
शीशो के पार से ही
नदी की धारा
- (17) जो है धरा पे
प्रकृति आनन्द ले
पूर्ण रूप से
- (18) है संगम ही
आज कई रूपों का
प्रकृति में भी
- (19) भाव विभोर
सूर्यस्त का सिन्दूर
देखकर मैं
- (20) लग रहा है
जंगल का सन्नाटा
दुपहरी-सा
- (21) अनुपमेय
धरती भारत की
अपने-आप
- (22) वृक्ष का मूल
सागरों के झकोरे
मातृभूमि के
- (23) बरस आज
मतवाले बादल
मेरे आँगन
- (24) है सड़ी
में गिराव गिराव
झार गिराव

- (24) डैने फैलाए
आकाश में चिड़ियाँ
करती सौर
- (25) मिल हुए
मिल हुए
मिल हुए
- (26) भिगोया भू को
सुगन्ध बिखेरने
वर्षा फुहार
- (27) सुबह हुई
अनुराग से भरा
सारा क्षितिज
- (28) स्वागत गीत
सुबह होते ही
पक्षी ने गाया
- (29) खिलती सदा
मुस्कराने के लिए
कली हमेशा
- (30) बन जाती है
वसंत में प्रकृति
अभिसारिका
- (31) मद्दिम बूँदें
तपती धरती पे
फेंकती गंध

(32)

लौट आती हैं
तरंगें सागर की
कुछ देने को

तृष्णा-तृष्णा
इ एक रक्षीष्टपृ
लगाव लिक

(33)

खोती नहीं हैं
सागर की लहरें
मर्यादा कभी

(34)

जँडीहलनि
तिरुष्ट-तिरुष्ट
कि चम प्राम

(35)

बदलते हैं
प्रकृति के विधान
भावनाएं भी

(36)

तिरुष्ट तिरुष्ट
सि छिलीष्ट कि छुर्प
प्राम नि त्रुष्ट

(37)

पाते हैं मोती
गहरे सागर में
उतरने से

(38)

छालूँ छालूँ
प्रिलीचति तिरुष्ट
कि निर्म सर्व

(39)

मन मयूरा
भटक रहा वन
उपवन में

(34)

तिरुष्ट तिरुष्ट
धार तिरुष्ट तिरुष्ट
ताम्रक-त्रिष्ठ

(35)

करते नहीं
चोरी, डकैती पेड़,
सच मानिए

(36)

ति तिरुष्ट तिरुष्ट
त्रुष्ट कि चार्म तिरुष्ट
तिरुष्ट तिरुष्ट

(37)

चले सैर को
सुदूर आकाश की
पंख लेकर

(38)

तिरुष्ट ताम्र
तिरुष्ट त्राम्र
प्रिली तिरुष्ट

(39)

देख चकोरी
धवल चाँदनी को
मुस्काए मन

(40)

तिरुष्ट त्रिष्ठ
त्रुष्ट कि तिरुष्ट
ति ताम्र त्रिष्ठ

(48)

है शिव डाँड़
कि शमार मिठ
कि हिंदु छलु

(41)

भींगी धरती
उगले सोंधी गंध
वर्षा-कमाल

(48)

हिंदु हिंदु
इंग निकुंठ शिव
पृथिव छल

(43)

हरी पत्ती से
गिरी ओस की बूँदें
मोती लगते

(48)

कि हिंदु हिंदु
कि डाँड़ा श्रुतु
उक्कल हिंदु

(45)

रात अँधेरी
जुगनू बिखेरते
थोड़ी किरणें

(48)

शिक्काड़ हिंदु
कि चिरांग लकड़
मन ग्राम्यहृ

(47)

क्यों इठलाते
फूलों को देखकर
भौंरे बाग में

(40)

अंग-अंग तू
पुलकित कर दे
काले बादल

(48)

है छिप शिव
एकल कि शमार
मिळ डाँड़ा

(42)

गिलहरियाँ
चढ़तीं-उतरतीं
भाँए मन को

(48)

है ठाठड़
माझी रु निमुख
मि ग्राम्यहृ

(44)

गिरते पत्ते
पेड़ की डालियों से
हवा ले गए

(48)

शिव है शिव
मि शमार इहां
हि शिव

(46)

फूल गुलाब
उड़ती तितलियाँ
रस लेने को

(48)

एङ्ग फू
कड़ लुट रुड़
मि निमुख

- (46) दिग्गं निष्ठु
कि छारपि निष्ठु
तिथि निष्ठु
- (47) बादल-बीच
चमकती बिजली
वर्षा-आहट
- (48) हिंड कृष्ण
ग्रीष्म हुए लह
तिथि लह
- (49) छत-मुड़ेर
उतरी है सांझ में
सूर्य किरणें
- (50) निर्वाचन
किञ्चन्ति कि व्याप
तिथि व्याप
- (51) रात कालिमा
एक नन्हा-सा दीया
छाँटा अंधेरा
- (52) निर्वाचन
किञ्चन्ति कि व्याप
तिथि व्याप
- (53) पिंजड़े-पंछी
निहारते तितली
स्पृह्य भाव से

- (46) आसानी नहीं
गहरे सागर को
जानना दोस्तो
- (47) श्रावण छाँप
मि श्रावण कि श्राव
श्रावण श्राव
- (48) चंदन-वन
बिखरती सुगंध
पवन-संग
- (49) हिंड कृष्ण
ग्रीष्म हुए लह
तांज-पृष्ठी
- (50) है बरसती
फिजाओं में आज भी
नूर किसके ?
- (51) निर्वाचन
किञ्चन्ति कि व्याप
तिथि व्याप
- (52) है हँस रहा
समय का सूरज
अँधकार में
- (53) हिंड कृष्ण
श्रावण कि श्राव
कि श्रावण

(54)

हिंन निमाल
कि जगह छवाइ
किंजड़ नस्ताल

(55)

पंख पसारे
वर्षा की फुहारों में
नाचे मयूर

(56)

त्रिपुरा-त्रिपुरा
लिलाति लिलाति
चम्पा-चम्पा

(57)

छिटक रही
बर्फीले पहाड़ों पे
किरणें-चाँद

(58)

हिम्मत है
मिलाव मिलाव
किम्बती किम्बती

(59)

काश ! बोलती
जल की मछलियाँ
नौकाएं देख

(60)

त्रिपुरा-त्रिपुरा
लिलाति लिलाति
चम्पा-चम्पा

(61)

चमक रहे
नूतन किसलय
ये गुलाब के

(56)

उड़ते पक्षी
देखते पिंजडे को
हहर जाते

(57)

त्रिपुरा-त्रिपुरा
लिलाति लिलाति
चम्पा-चम्पा

(58)

फूल-कली में
हंस रहे हैं भौंरे
त्रस्त जनों पे

(59)

त्रिपुरा-त्रिपुरा
लिलाति लिलाति
चम्पा-चम्पा

(60)

हिंडोरे लेती
शरद की चाँदनी
सागर तले

(61)

त्रिपुरा-त्रिपुरा
लिलाति लिलाति
चम्पा-चम्पा

(62)

आकाश गंगा
झिलमिलाते तारे
लगे सुहाने

(63)

त्रिपुरा-त्रिपुरा
लिलाति लिलाति
चम्पा-चम्पा

(63)

ठिठड़ास है
ए प्रांतिक छाए
निरुक्त लग्नक

(65)

चन्द्र-किरणें
हिलोरे ले रही हैं
सागर तले

(65)

निक रास्क
ल किडु प्राणवाल
लाल-पेंक

(67)

बतिया रहे
नौका में एक साथ
मछरे-सांझ

(68)

पाँडी कर
है ठिक प्राप्तहृ
है निष्काश

(69)

सभी पतंगें
हैं मरते-मिटते
एक किरण पे

(70)

कन्फ-ज्ञान
निष्कर्ष करना
निर्मां क साँध

(71)

बहलाती थी
अबतक मन को
संध्या अरुण

(64)

मचल रहीं
जल की मछलियाँ
गांव-तालाब

(65)

है लीक प्राणि
है ए निष्ठ निष्ठ
लक्ष्मी लक्ष्मी

(66)

पूनम-चाँद
बिखेरती किरणें
हुलसे जिया

(67)

प्राप्त लक्ष्मी
निकनि है विधान
है निष्ठ

(68)

हैं झूम उठे
पेड़-पौधे मरती में
ग्रीष्म-वर्षा में

(69)

प्रिये कि सर्व
है निष्ठाम इकिं
लक्ष्मी-लक्ष्मी

(70)

है कंपा देती
झींगुर की झंकार
तन्द्रा के तार

(71)

प्रिय-जकि
है चन्द्रिनि निकी
प्रिय-निष्ठा

(46)

ठिये लहसु
जँडीलास कि लाह
शालमत-बाह

(73)

सीखा कलि ने
सूनी डाली पर ही
मुर्सकाना सदा

(48)

झाँड़-मनप
पियकी किरणी
जँडी लाहु

(75)

बादल छाएः
आँखों से निकले
सपने मेरे

(49)

ठछ साहू हूँ
मि फिल जँग-हर
कि लाह-पील

(77)

प्रेम को अंधो
कीड़े मंडराते हैं
प्रकाश-तले

(50)

फिल गँड़ कु
शकाहू कि शुस्ति
प्रान के इल

(79)

कीट-पतंगे
कितने जीवन्त हैं
रोशनी-संग

(72)

है मङ्गराती
अब कलियों पर
कोयल काली

(46)

पियकी-इल
हूँ ठिये कि रँडिली
लिल शामल

(74)

केसर कली
लहराया पृथ्वी का
स्वर्ण-अंचल

(48)

झिल गँड़ी
आस लपु से लँडी
म्हांस-हुप

(76)

एक गौरैया
चुपचाप बैठी है
वातायनी में

(49)

फिल गिल
हिली-हिल
मि लियकी कपु

(78)

अबोध-नन्हे
लपके पकड़ने
ओस के मोती

(50)

दि फिलड़ा
कि लाम लँड़ा
एलाउ लँड़ा

(88)
है किंडी छाँच
पर छतीजी पृष्ठ
नि पृष्ठ छिक

(81)
वह शाम मैं
नहीं भूल सकता
नदी-तट की

(89)
एङ्ग कि निष
स्कार्प ए लतीजी
कि समस्ताद

(83)
आती जिससे
दिनकर किरणें
बन्द झरोखा

(84)
नि छाँ तिस
निक के प्रभुमुक
पर पृष्ठ-तिक्क

(85)
घूमने लगी
किश्ती समंदर में
पानी पर ही

(86)
गिराव नि डाफ
ईडान कि इमुस
पर ले तर्ह

(87)
भिंगो जाती हैं
समुद्र की लहरें
मेरे पैरों को

(80)
विधवा हुई
पतझर की सांझ
हर काल में

(88)
पालनी निष
निष्टु के निष्टु
निष्टकी निष्ट

(82)
अंकित होते
मिट्टी पे मेरे पैर
कुछ छोड़ते

(83)
है निष्टु निष्ट
कि निष्टाँ निष्ट
निष्टु के निष्ट

(84)
कर दी गयी
लहरों के हवाले
हमारी किश्ती

(85)
निष्टानी निष्ट
पर निष्टाँ-निष्ट
प्राप्त निष्टकी

(86)
लाल हो रहे
सूरज के प्रकाश
समुद्र तले

(87)
निकाद निष्टकी
निष्टु निष्टु
पर प्रभुमुक

(87)
इहु लिखती
स्त्री कि प्रशंसन
में लाल छु

(88)
हमने किया
लहरों के हवाले
अपनी किश्ती

(89)
तिथि रक्षाएँ
मैं प्रिये द्विमि
किश्ती छहू

(90)
पीने लगी है
धवल चाँदनी को
चाँद के होंठो

(91)
प्रिये कि शक्ति
प्रियदु कि प्रियान
प्रियती प्रिया

(92)
खत लिखती
चाँद-चाँदनी पर
किश्ती सवार

(93)
हुए कि लाल
छाकाएँ कि लाल
प्रिये लाल

(94)
किश्ती अकेली
तैर रही बेचैन
समुंदर में

(88)
आँखे टिकी हैं
दूर क्षितिज पर
बड़ी देर से

(89)
मैं साइ लड़
प्रकार लाल भिन्न
कि उत्त-सिं

(90)
छुने की इच्छा
क्षितिज पे जाकर
आसमान को

(91)
प्रियती प्रिया
प्रियती प्रियती
प्रियती प्रिया

(92)
मोती गढ़ ले
समुंदर के तले
स्वाति-बूंद पर

(93)
प्रिये प्रिये
मैं लाल प्रियती
कि प्रिये प्रिया

(94)
बहा ले जातीं
समुद्र की लहरें
रेत के घर

(95)
तैर गिरा प्रिया
बड़ा कि लाल
कि प्रिये प्रिया

(96)
सीचते खेत
सूरज की किरणें
पड़ा है सूखा

(97)
इमली-पेड़
चहकती चिड़ियाँ
गुलाबी जाड़ा

(98)
कच्ची सड़क
महुए की कतारें
फैली सुगंध

(99)
बरसात में
उड़ रहा बेपर
खग आसमाँ

(100)
लेता हिलोर
नभ में विहंगों के
मधुर राग

(101)
खिला कमल
परिचय पाकर
निर्मल जल

(102)
उगलता है
गगन अन्धकार
है अमानिशा

एस एस
सिंह-झट्टीस

(103)
झरे पराग
कांपते किसलय
गाते खग हैं

(१६)

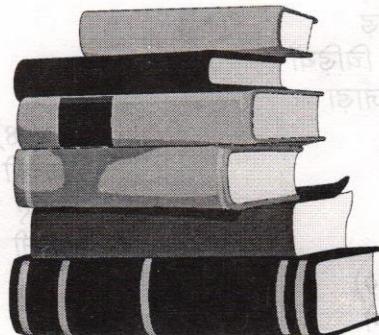
नई निवास
प्रियकी कि छालु
छालु है छाल

(१७)

बड़ा-लिम्ह
बीती लिकड़ा
छाल लिकड़ा

(१८)

मालायू
सर्व रुद्र इच्छा
लिकड़ा लिकड़ा



(१९)

कदाच निवास
प्राप्तक कि छालु
छालु कि

(२०)

लिम्ह लिकड़ा
उकाए उड़पी
छाल लोकगी

(२१)

हृ लिकड़ा
प्राप्तक निवास
लाइसेन्स है

बनता नया
साहित्य-प्रेरणा से
जीवन मेरा

लाइसेन्स

लिकड़ी लिम्ह

हृ लिम्ह लिकड़ा

१६ ग्र. काली कि लिम्ह

साहित्य

शक्ति वीरोऽम्

मित्र राजाम् डिन

मि स लेखा

(1)

साहित्य में ही

इतिहास राष्ट्र का
प्रतिबिम्बित

(2)

तक प्रियाण्डर

प्रकृति नहीं

प्रकृति-वीरोऽम्

(2)

साहित्य होता

उदात्त आदर्श का

प्राज्ञ-प्रतिष्ठापक

(3)

ई काचीनाम्

पोषक नहीं

होता साहित्य कभी
वर्गवाद का

(4)

प्रायक पर्व

कि फड़ील रुक्क

रुक्क भैष ई

(4)

होता आया है

युग का प्रतिनिधि

साहित्य सदा

(5)

ई अम इ

वाहक होता

है सदैव साहित्य

परम्परा का

(6)

शक्ति वीरोऽम्

तिलाम काचीनाम्

एकजी ई तक

(6)

जटिल होता

युग-चेतना ग्रहण

साहित्य में भी

(7)

सच्चा आनन्द

होता है साहित्य का

सौन्दर्य में ही

(7)

फड़ील डिन

तिल ई प्रायन्तु

कि प्रियाण्डर

(8)

साहित्यकार
नहीं भागता कभी
यथार्थ से भी

(9)

प्रेरणाओं का
उचित तारतम्य
साहित्य-लक्ष्य

(10)

सन्देह नहीं
साहित्य का आधार
सामाजिक है

(11)

सेवा करना
केवल साहित्य की
है धर्म मेरा

(12)

साहित्य पर
राजनीति-प्रभाव
बढ़ गया है

(13)

साहित्यकार
सामाजिक आकृति
का है चितेरा

(14)

जमती नहीं
मन की परतों में
बिना रचाए

(15)

वही साहित्य
सुलझाए जो आज
उलझनों को

(16)

कृसंस्कारों से
है दिलाता जो मुकित
साहित्य वही

(17)

पहुँचे लाभ
हाँ ऐसी रचनाएँ
मनुष्यता को

(25)

त्रिशूल और लिंग
शंख हाथ माननी
के लिए डिर्धी

(18)

बदलता है
राजनीति की दिशा
सत् साहित्य

(26)

त्रिशूल ईशान ढं
शीण शिशान
शक्ति शिशक

(19)

लिखा आपने ?
सच्चा साहित्य कोई
समाज पर

(20)

साहित्य वही
मनुष्य को मनुष्य
बनाता है जो

(27)

त्रृष्णा शास्त्र साधी
पार्वती रघुवंश इष्टीक
रघुवंश चामफ

(21)

लेखनी ऐसी
बन्धनों के खिलाफ
मिलती कहाँ ?

(22)

बह रही है
सृजन की गंगा भी
उल्टी दिशा में

(28)

डैंडिया फाँठ
सि शास्त्री इष्टीक
मि शिशक छान्द

(23)

विश्वास नहीं
आज के लेखकों को
नसीहत में

(24)

है अवदान
उपन्यास क्षेत्र में
प्रेमचन्द का

(25)

होते न बासी
निबन्ध बहुतेरे
द्विवेदी जी के

(26)

मान इंडिपूर्न
प्रान्तिक सिर्फ़ ति
कि प्राण्डिपूर्न

(27)

ओ सहधर्मी
साहित्य के द्वारा पे
नमन तुम्हें

(28)

सफल क्रान्ति
साहित्य व समाज
के विचारों से

(29)

जिस भाषा का
साहित्य अच्छा होगा
समाज अच्छा

(30)

आज अधिक
सामाजिक दायित्व
साहित्य पर

(31)

होता नहीं है
साहित्य विचार से
शून्य कभी भी

(32)

हिंसा सावधानि
ति क्रियानि के लिए
में चर्वाचिन

(32)

हाशिए पर
कि वर्तमान दौर में
रचनाकार

(33)

संकोच नहीं
मुझे सीखने में ही
कोई भाषा भी

(34)

गिरह तिक्कास
प्रामाण छड़ियाँ, जी
ठिक नहीं

(35)

उर्वर रहा
साहित्य की दृष्टि से
इलाहाबाद

(36)

अग्रणी रहा
साहित्य की धारा में
पाटलीपुत्र

हुई छड़ियाँ
मिलक तिक्कास कराई
छड़ियाँ कराई

(37)

राजनीति का
चाकर बन गया
साहित्य आज

(38)

बने गुलाम
साहित्यकार आज
स्वार्थवश ही

(39)

जरूरत है
सांस्कृतिक उन्नेष
की साहित्य में

(40)

नामधीन प्राप्ति
उन्नेष कि छड़ियाँ
आजनीहूँ

(40)
बुनियाद है
सृजन संस्कृति की
इसे जानिए

(41)
संस्कृति होगी
दिशाहीन अगर
सृजन नहीं

(44)
डिस्ट्रिक्ट इकाइ
में फ़िल्म किंवा ड्रॉप
में प्राप्त ड्रॉफ्ट

(42)
लोक साहित्य
देता है परिचय
राष्ट्रीयता का

(43)
प्रतिबिंब है
लोकसंस्कृति का भी
लोक साहित्य

(45)
हार्ड प्रिंटिंग
में प्राप्त किंवा ड्रॉफ्ट
हार्ड किंवा प्रिंटिंग

(44)
श्रेष्ठ व्यक्तित्व
उत्कृष्ट साहित्य का
प्रतिफलन

(45)
अभिव्यक्ति है
मानस-संघर्ष का
साहित्य आज

(46)
ट्रॉफी की लिंगायत
प्राप्ति किंवा प्राप्ति
चाहे ड्रॉफ्ट

(46)
पैदा करता
आधुनिक साहित्य
नया विश्वास

(47)
शिल्प विधान
साहित्य की रचना
में अनिवार्य

(48)
ड्रॉफ्ट
प्राप्ति की कुछ तरह
में ड्रॉफ्ट किंवा

(48)

होता है लक्ष्य
सौन्दर्य की सृष्टि ही
कलाकार का

(49)

शिल्पी-तूलिका
से रूप और भाव
होते हैं व्यक्त

(50)

ग्राहय नहीं है
बड़ी सहजता से
शिल्प का भाव

(51)

जाती है सदा
कलाकार की दृष्टि
त्रिकालों पर

(52)

जगाना भी है
दिल की भावना को
शिल्प का कार्य

(53)

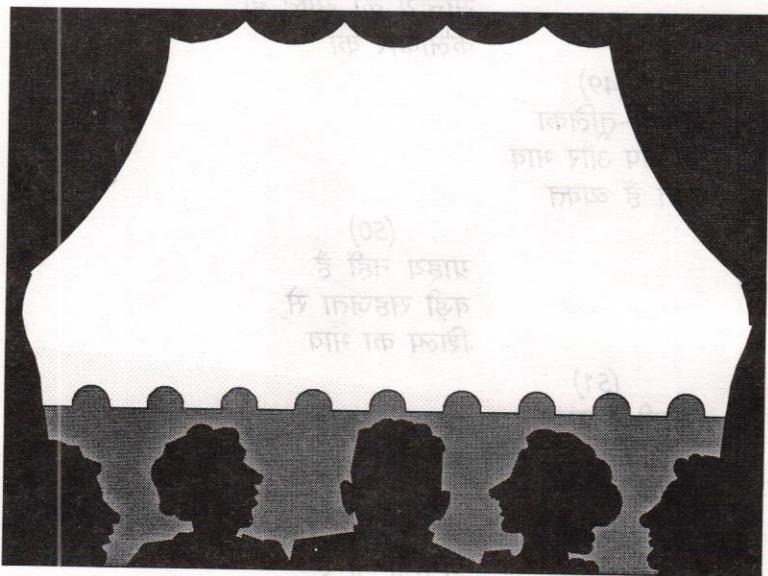
तृप्ति करता
हमारे नयन को
शिल्प-सौन्दर्य

(54)

बहा ले जाते
आसुओं के जल में
मेरे सपने

(55)

प्रतिष्ठा देता
साहित्य प्रयत्न को
दर्शन भी है



जीवन के लिए

संरक्षित

जीवन के लिए
जीवन के लिए
जीवन के लिए

(२६)
मेरी पत्नी ने
दूटने से बचाया
मुझे सदैव

संस्कृति

मात्र छक्कु राहिं

मात्र महा

(1)

भद्रे गीतों का
शोहरत के लिए
चलन आज

(2)

मि छा जिस
ने राहि प्राणाशु
ठारिंग काठ

(2)

फिल्मी दुनिया
बदन दिखाने की
है आँधी चली

(3)

बेचैन आज
नई हीरोइने भी
अंग-दिखाने

(4)

सुख तो सिफ्र
निर्वाण में निहित
है बुद्धमत

(5)

देती बढ़ावा
विपुल धनराशि
अपसंस्कृति

(6)

कहीं न अंत
भौतिक सुविधा का
होता है कभी

(7)

परिष्कारक
प्राकृतिक जीवन
की है संस्कृति

डि जिस मछ

जालनी द्वापुष्ट

मि रिंग रामाकि

(8)

सभी रागों में
होता हृदय राग
उत्तम राग

(9)

माटी गंध से
सराबोर होता है
लोक संगीत

(10)

कला-संस्कृति
अन्तःऊर्जा होती है
मनुष्यों में भी

(11)

कूड़ेदान में
जाएगी फिल्म, गर
खाली-डिब्बा हो

(12)

होती जा रही
विचार व संस्कृति
हाशिए पर

(13)

खाए जा रहा
जाने कौन-सा धुन
संस्कृति को ही

(14)

जग जाती है
सुषुप्त अभिलाषा
कोमल क्षणों में

(15)	नहीं चाहती	(५५)	तिक्तक ४८
	छूट, कलुष भावें	मिलनी प्राप्ति ठि	कि हि ग्रन्थ
	सभ्यता सदा		
(16)	मिटेंगे स्वयं	(६५)	प्राप्ति रुक्ष
	कलह छुटपुट	मि निषेध तक प्राप्ति	प्राप्ति के प्राप्ति
	सहिष्णुता से		
(17)	होती अलग	(५६)	४७ निर्विज
	सदा एक संस्कृति	हि तिक्तक एष्टाइ	तिक्तक-काँड
	भाषाओं की भी	तिक्तक-काँड	
(18)	कर रही हैं	(६६)	हि रुक्ष ग्रन्थ
	भाषाएं भी निर्माण	तिक्तक ग्रन्थ	तिक्तक ग्रन्थ
	संस्कृति की ही	तिक्तक ग्रन्थ	
(19)	गहरी काफी	(६७)	हिम्मत रुक्ष
	हमारी संस्कृति की	हिम्मत रुक्ष	
	जड़ें यहाँ भी	तिक्तक कि ग्रन्थ	
(20)	जीता-जागता	(६८)	हि निषापन
	प्रतीक संस्कृति का	तिक्तक के निर्विज	
	भारत आज	तिक्तक ग्रन्थ	
(21)	कौंधता सदा	(६९)	मन्दि तक ग्रन्थ
	अंतिम विचार ही	हि तिक्तक रुक्ष	
	मन-आंगन	तिक्तक मि ग्रन्थ	

(22) उसे कहते हो लगाव जिससे अपना ही तो

(२१) चित्राल शिर गम्भीर उच्च रक्षण निरुद्ध

(23) बदल जाता युग का दर्शन भी युग के साथ

(२२) छल शिरी उष्टुप्तु छलक रुप्तुष्टिरुप्ति

(24) जीवन रस ग्रहण करते हैं लोक - संस्कृति

(२३) प्राण शिर निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ

(25) अंग रहा है हमारी संस्कृति का कला साहित्य

(२४) हृ छिं रुक नन्नी दि ग्राम डि कि निष्ठन्न

(26) मत समझें एक वाहय गुण ही कला को आज

(२५) शिक शिरा निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ

(27) प्राणवन्त हैं जीवन के सौन्दर्य से कला आज

(२६) निष्ठन्न - निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ

(28) कला का जन्म हृदय और मन के योग से होता

(२७) निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ

(29)

गूंज रही है
संस्कृति-मंडप में
अपसंस्कृति

(30)

रंग गयी है
शोणित-शुभ्रपट
संस्कृति चुप

(31)

कट रहा क्यों
मानव समाज ही
धरोहरों से

(32)

संस्कृति आज
ठहर नहीं रही
प्रदूषण में

(33)

मरते नहीं
विचारों की तरह
सारे सपने

(34)

नैतिक बोध
जिसमें जितना
सुसंस्कृत है

(35)

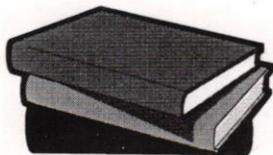
इक जुड़ा रहता
संस्कृति की स्मृति से
हर मनुष्य

(१५)

डैडी चित्त

मेरे पांच-तीनों

तीनों तीनों

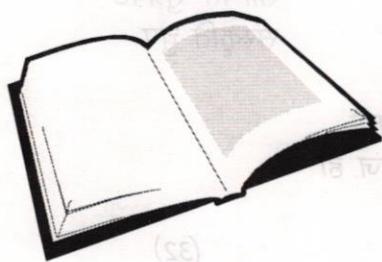


(१६)

कृष्ण कृष्ण

१४ चाला चाला

२८ चिराय



(१७)

जाए तीकुलां

डिं डिं अहो

२८ चाला

हिन्दी

(१८)

आँख काठी

पाठारी खिलारी

डैडी छुम्हेहु

वक्ता नहीं है

द्विवेदी जी-सा कोई

आज हिन्दी में

छहा ७८

हिन्दू

हि राजि भाषाम्

मि भाषा म्

(1)
हिन्दी का कोई
दीखता न विकल्प
किसी भाषा में

(2)
प्राचीन संस्कृत
लक्षणिति रि भाषा
प्राची के लिए

(3) (2)
है यह स्पष्ट
सर्व किरण-भाँति
हिन्दी हमारी

(3)
प्रथम स्थान
सुब्रमण्यम् भारती
हिन्दी में पाया

(4)
ठिस ड्रॉ डू
डिस डिल गिर्जाह
रि फ़िक्री डिन्डी

(5) (4)
देना ही होगा
योग्य स्थान हिन्दी को
आज न कल

(5)
न मातृभाषा
है मातृ देश-भाषा
हिन्दी हमारी

(6)
नगार्जुन डू
मि भाषाम् प्राची
मि भाषा डिन्डी

(6)
न ले सकती
स्थान ही कोई भाषा
इस हिन्दी का

(7)
केरल-राजा
स्वाति तिरुनाल्ल
पद्य हिन्दी में

(7)
शाजपी इक
प्राची के भाषाम्
मि भाषाम्

(8)

कब बनेगा
राष्ट्रभाषा शीघ्र ही
राष्ट्र प्राण भी !

(9)

जोड़ना होगा
भाषा से जीविका
जन के लिए

(10)

इंकार किन्हीं
मनकी है राष्ट्रकी
है भाषा किसी

(11)

है यह सही
जायेगी लादी नहीं
हिन्दी किसी पे

(12)

साथ साझर
किंशास मध्यमहसु
आप हैं किंडी

(12)

हो समर्थन
अहिन्दी भाषियों का
हिन्दी के लिए

(13)

है पैनापन
और सरसता भी
हिन्दी भाषा में

(14)

पीछे रहेगी
कबतक हमारी
हिन्दी भाषा ही ?

(15)

करें विचार
राष्ट्रभाषा के लिए
गंभीरता से

(16)

साथ-साझर
ज्ञानलति किंशास
है किंडी उप

(16)
हिन्दी हमारे
संस्कारों की हमेशा
है पहचान

(17)
जरूरत है
गतिशीलता की ही
आज हिन्दी में

(25)
है इन्हुँ उक्त
शब्द कि लालचार

(18)
जुड़ा है आज
राष्ट्र की प्रतिष्ठा से
प्रश्न हिन्दी का

(19)
अभी भी तो हो
जनता की भाषा में
राज का काम

(25)
इन्हुँ न छिड़ी
कि लालचार

(20)
जरूरत है
लचीला बनाने की
आज हिन्दी को

(21)
अभागिन-सी
दिखे आज सबों को गताप्ति है तक
भारत-बिन्दी

(25)
किए संस्कृत

(22)
जरा न माने
जनता की भाषा को
शासक आज

(23)
जुड़ न सकी
हिन्दी कभी रोटी से-हाथ लिंगिय
इस देश में

(25)
है विन लालू

(24)

बापू ने कहा
अंग्रेजी नहीं आती
दुनिया सुने

(25)

कहाँ हुई है
राजकाज की भाषा
हिन्दी आज भी

(26)

पलती दासी
राष्ट्र की भाषा हिन्दी
अपने घर

(27)

हिन्दी न हुई
राष्ट्रभाषा राष्ट्र की
आज तक भी

(28)

सदैव हिन्दी
दुलमुल नीतियों
का है शिकार

(29)

तरस रही
हिन्दी भाषा आज भी
राज के लिए

(30)

मुक्त नहीं हैं
अंग्रेजी मोह-पाश
से हम अभी

रामनीक



(१)

इस प्राप्ति
लगी रुप
में लोक विक

(२)

इस प्रिया के
लिए अपार्थ कि द्वारा
ही विक द्वारा

(३)

कविता

प्राप्ति है राम डि
प्रकृष्ट राम

(४)

दिव्य उत्तर
में अधिकारी
हर कविता
कवि के हृदय में
होती कसक

अंडम तक रामनीक
है नामनीक

कविता

(1)

बहाता सदा
है सरस सलिला
कवि धरा पे

(2)

जरुरी होता
होने के लिए कवि
आदमी होना

(3)

दें वाणी सदा
राष्ट्र की भावना को
भाई कवि जी

(4)

पृथक नहीं
शिल्प के प्रभाव से
काव्य यहाँ का

(5)

कुछ लोग ही
हो पाते हैं अमर
गीत छूकर

(6)

फूट पड़ती
है आत्मनिष्ठा भी
कविताओं में

(7)

मानव एक
कविता का पहला
प्रतिमान है

(8)

लय शास्त्र है
कविता का अपना
इसे जानिए

(9)

घोर अनास्था
नए कवि को आज
आस्थावाद में

(10)

रख पाएंगे
ताजा तेरी स्मृति को
शब्द गीतों के

(11)

लिखता सदा
अपनी कविता में
पीड़ा-बोध को

(12)

हैं जन्म लेती
बड़ी पीड़ा के साथ
अच्छी कृतियाँ

(13)

कवि करता
सृजन जीवन के
कुछ क्षण का

(14)

होते हैं बंधे
रचनाकार, कवि
नियम से भी

(15)

जीता है कवि
आस्था और अस्तित्व
के लिए अभी

(16)

प्राणी शास्त्र
खड़ी प्राप्त होता
कि उपर्युक्त

(16)

अभिशप्त हैं
आज कवि हमारे
सच के लिए

(17)

चाहिए होना
कवि को जिम्मेवार
अपने प्रति

(18)

समेटती है
कि सामाजिक चिंता को
हिन्दी कविता

(19)

लगाव बढ़ा
है कविता के प्रति
साहित्य में भी

(20)

लाक्षणिकता
चार चाँद लगाती
काव्य-शिल्प में

(21)

सेतु होता है
वस्तु व भाव लोक
मात्र बिस्त्र ही

(22)

उमड़ता है
फूस की झोपड़ी में
सिन्धु-मानस

(23)

यादें संजोए
'नई धारा' पत्रिका
बेनीपुरी की

(24)

चिक्की है गाड़ि
सातसियां प्रांदू प्राणां
मिथ प्रती के

(24)

सपना नहीं है
हो जिसके भीतर
कविता नहीं

(25)

कवि करता
अपनी रचना में
प्राण-प्रतिष्ठा

(26)

मैं प्रधानशीक
लि जासूत लिखा
जाएगा जागृत

(26)

लिखी जाती है
सदा विवशता में
अच्छी कविता

(26)

जासूत लिखा
उत्तरी के प्रधान
प्राण-प्रतिष्ठा

(27)

धीर-गंभीर
मर्मभेदी आवाज
मेरे काव्य में

(28)

अभी शेष है
हिं सच्चा लिखना ही
कवि बन्धु को

(26)

जासूत लिखा
मैं प्रधानशीक
जाताजड़ीम

(29)

हैं हिन्दी कवि
अपने आपको ही
दुहरा रहे

(30)

जो शाश्वत हो
भावी पीढ़ी के लिए
लिखिए वैसा

(26)

मैं प्रधानशीक
नडिसापर है किंठि
उत्तरि लि लिक

(31)

दीखती आज
ज्यादा कविताओं में
गहन ऊब

(32)

है सहायक
अनुकांत छंद भी
सौन्दर्य वृद्धि

(33)

कविताओं में
असली संसार को
तराशा जाता

(25)

प्रशंक शिक्ष
में प्रशंक शिक्ष
प्रशंक-शिक्ष

(34)

लिख रहा था
एक कविता वह
अपनी माँ पे

(35)

पलता सदा
कवियों के भीतर
रचना-भ्रूण

(27)

प्रशंक-शिक्ष
क्रान्तिकार शिक्ष
में छात्र शिक्ष

(36)

भाषा के सिवा
हि अन्य औजार नहीं
कवि के पास

(37)

देता प्रकाश
अंधेरी गुफाओं में
साहित्यकार

(25)

शिक्ष शिक्षी हैं
हि क्रान्तिकार शिक्ष
इन शिक्ष

(38)

कवि कभी भी
अपनी अभिव्यक्ति
रोकता नहीं

(28)

प्रशंक शिक्ष
हि क्रान्तिकार शिक्ष
इन शिक्ष

(39)

रचनाओं में
होती है प्रवाहित
कवि की पीड़ा

(40)

कवि उगले
वाणी से पचाकर
पीड़ी-उत्तरास

(41)

कविता आई
शब्दों के ही शरीर
पहनकर

(४१)

एकल डिन
साक्षि रुक्मिनी
मिथि निराकरण

(42)

अभाव यदि जील
प्रेरणा-स्रोत का हो
कविता बंद जीक

(४२)

डूँगर सूक्ति
मि निष्ठा के लिए
ज्ञान शामन

(43)

ठोस न होती
बिना कृति के कीर्ति
व प्रतिष्ठा भी

(44)

लिखता नहीं
वाद में बंधकर
कोई कविता

(४४)

मिर्ज़क राह
मि घोक प्रशंसन
मिर्ज़ न इसम

(45)

ऐसा लिखिए
लेखक व पाठक
को कुछ मिले

(46)

स्वांतः सुखाय
रचना का उद्देश्य
होता है कभी

(४६)

मिर्ज़ी उड़ान
मि इन्डियन इ फ्लाई
मिस्ट्री मि प्राइम

(47)

फूट पड़ती
हमारी कामनाएं
निर्दयता में

(४७)

मिर्ज़ी उड़ान
मि इन्डियन इ फ्लाई
मिस्ट्री मि प्राइम

(48)

अवचेतन
में दबी वासनाएँ
निकल पड़ीं

(49)

नहीं रुकता
प्रतिभा का विकास
रोकने से भी

(48)

द्वाष्ट लालिक
पश्चिम के कुँस्तांग
उक्तनाम

(50)

कवि मित्रों के
सान्निध्य ने मुझको
कवि बनाया

(51)

फिसल रहे
उंगली के छूने से
हमारे शब्द

ठिठि न स्थिति
तीकि के तिकुल आनंदी
मि स्थितीपे फ

(52)

रचता रहा
शुभ और अशुभ
के सब बिन्दु

(53)

पैदा करेगी
जो कुहासा काव्य में
भाषा न मेरी

एष्टीनी लालू
लालू व कालू
लाली लकू ति

(54)

बन्द कमरे
खुली खिड़की-सा
तुम्हारा ख्याल

(55)

अटूट रिश्ता
शिल्प व सौन्दर्य का
काव्य में सदा

तिकृष्ण उकू
प्रात्माक शिम्बु
मि लालैनि

(56)	काव्य का लक्ष्य	(६०)	तिन्हीं निक प्रशिक उकड़क है प्राणकिस
	आनन्द-उपलब्धि		
	लोक-मंगल		
(57)	गीतों में व्यंग्य	(५८)	प्राप्ति निक
	कुनकुनी धूप-सा		प्रशिक काशीमास
	फैल जाता है		प्रकृष्टि रु
(58)	अच्छा आदमी	(२०)	है प्राप्ति डक
	ही लिख सकता है		प्रशिक ग्राम
	अच्छी कविता		प्राप्ति ग्राम
(59)	यश ही होते	(६१)	प्रशिक डक
	काव्य के पुरस्कार		प्रशिक काशीमास
	कवियों के भी		प्रशिक ग्राम
(60)	लालायित हैं	(२१)	तिन्हीं प्राप्ति
	कवि प्रशंसा हेतु		प्राप्ति काशीमास
	चन्द शब्द के		प्रणिम ग्राम
(61)	बिखेरता है	(६२)	तिन्हीं प्राप्ति
	कवि, कर्ण की भाँति		प्रशिक ग्राम
	अनुभूतियाँ		प्रशिक ग्राम
(62)	काव्य-रचना	(२२)	है प्रशिक ग्राम
	सामाजिक क्रिया है		प्रशिक ग्राम
	किसी कवि की		प्रशिक ग्राम

(63)

नहीं रहती
बंधकर कविता
संकीर्णता में

(63)

प्रश्नों के ज्ञान
कृतिपृष्ठ-स्वरूप
संग्रह-क्रान्ति

(64)

कवि देखता
सामाजिक जीवन
में ढूबकर

(64)

प्रश्नों के ज्ञान
प्रश्न-प्रयुक्ति-स्वरूप
के ज्ञान के लिए

(65)

कहलाता है
वह आलम्बन, जो
भाव जगाता

(65)

स्विभाव समाधि
प्राकृति छाँटी हि
प्राणिक उड़ान

(66)

काव्य जीवन
मार्मिक छवियों की
अभिव्यक्ति है

(66)

जिहि ति इह
कृष्ण के ज्ञान
प्रि रु प्रियिक

(67)

कल्पना होती
मानसिक व्यापार
सच मानिए

(67)

है न डोलान
दृढ़ि प्राणिक चिक
के ज्ञान ज्ञान

(68)

कल्पना होती
कविता का आधार
प्राण सर्वस्व

(68)

है प्राणिक
कृष्ण के ज्ञान
प्रियिकृष्ण

(69)

अभिव्यक्ति है
परिव्याप्त सत्य की
कल्पना सदा

(69)

प्राण-ज्ञान
जर्ती काणिपृष्ठ
कि जीक शिरी

(70)

अभाव होता

मुख्य कारण सदा

कल्पना का भी

(71)

हि फिनि श्री

हु इन अक डि

कि ठंक श्री

(71)

उसी वस्तु की

करते हैं कल्पना

जो हैं अप्राप्त

(72)

डिं कार्ड

एफ्स एक अक

एक एक्स डिकी

(72)

आज कविता

हो गई है अलग

आम जन से

(73)

कार्ड बांध

हु इन्हु लांक

अक उन्हु च

(73)

प्रमुखता है

कल्पना तत्व की ही

काव्य में सदा

(74)

डिल-एफर

हु लुओड

इ लांड बैक

(74)

चल रही है

जीवन सहेली-सी

मेरी कविता

(75)

हु रेम्सांड

निरी दिक्क

पार्सनि-एक

(75)

झकझोरा है

हमारी कविता ने

मेरे मन को

(76)

डिं डिगि

एष्टु कनिष्ठा

एस्टु एक अक

(76)

हमारी भाषा

को संवारा है सदा

कविता ने ही

(77)

हु डिं डिल

एफ्स्टु एक

निर ने एक

<p>(77)</p> <p>मेरे मित्रों ने ही काव्य में डुबोया मेरे कंठ को</p>	<p>(८५)</p> <p>प्राचीन भाषण एशियन एस्ट्रो मि ल० लाइक</p>
<p>(78)</p> <p>बोधक नहीं काव्य का प्रयोजन किसी लक्ष्य का</p>	<p>(८६)</p> <p>कि एशियन सिएच ल० एशियन एस्ट्रो त्रिग्रामिक है एशियन</p>
<p>(79)</p> <p>संभव होता कंगाल हृदय में उत्कृष्ट काव्य</p>	<p>(८७)</p> <p>प्राचीन भाषण एशियन एस्ट्रो मि ल० लाइक</p>
<p>(80)</p> <p>प्रेरणा-बीज अर्थकृते-काव्य में कहाँ होता है ?</p>	<p>(८४)</p> <p>कि एशियन सिएच ल० एशियन एस्ट्रो एशियन है एशियन</p>
<p>(81)</p> <p>असमर्थ है एकाकी जीवन का काव्य-निर्माता</p>	<p>(८८)</p> <p>कि हिंदू लोक प्राचीन भाषण मि ल० लाइक</p>
<p>(82)</p> <p>गिरा नहीं है आधुनिक युग में काव्य का मूल</p>	<p>(८५)</p> <p>कि एशियन काल प्राचीन भाषण कि ल० लाइक</p>
<p>(83)</p> <p>काव्य वही है जो अनुराग लाए धरा के प्रति</p>	<p>(८७)</p> <p>प्राचीन भाषण एशियन एस्ट्रो कि ल० लाइक</p>

(84)

होना चाहिए
समाज की प्रगति
काव्य का लक्ष्य

(85)

सजीव होती
तल्लीनता में रची
गयी कविता

(86)

काव्य-रचना
देवी की प्रेरणा से
मूर्ख-प्रलाप

(87)

कवि होता है
साधारण मनुष्य
औरों की भाँति

(88)

प्रिय मित्रों की
अदम्य लालसा ने
कवि बनाया

(89)

प्यास मिटती
काव्य-सागर से ही
किसी कवि की

(90)

मानस-चक्षु
कवि के कवित्व की
पहचान है



मातृस-छान्

(१८)

प्रदीप सर्वि
तीव दीप वापस
भूमि के लिए

(२८)

किंच राजिस
विष मातृसिंह
काशिक भिर

(३८)

हे राजि शिळ
ज्यूस अनामस
निकि कि गुडि

शूंगार

किंचनि लाल

हि हि शास-पोक
कि शिळ किंचि

(०६)

ये मदमस्त
कहाँ से लाई तूने
कि लाणीक कि लिंग
हि लाइड

शूरार

उपन कि इंडिया

इंडिया के गीत

(1)

ये मदमस्त
कहाँ से लाई तूने
मेहदी हंसी

(2)

गोड गोड़ी उक्क
नि न्यु न्यु न्यु न्यु
गोड-गोड न्यु

(3)

है गूंज रहा
कहीं मेरे भीतर
प्रणय-गान

(4)

हाह प्राच
उक्क गोड़ुगोड़ गोड़ुगोड़
नि न्यु न्यु न्यु

(5)

हो यदि तुम
पूरे शृंगार में जो
कवि-कल्पना

(6)

गोड़िए गोड़िए
गोड़िए गोड़िए गोड़िए
गोड़िए गोड़िए गोड़िए

(7)

चलें सैर को
सुदूर आकाश की
पंख लेकर

(8)

गोड़िए गोड़िए
गोड़िए गोड़िए गोड़िए
गोड़िए गोड़िए गोड़िए

(8)

करें यकीन
थीं चांद की तरह
तारों के बीच

(9)

कर दिया था
जानलेवा हुस्न ने
मानो जादू-सा

(1)

नामहस्त इ^१
ग्रु द्वाल नि छिक
सिंह शिवर्ष

(10)

मुहब्बत का
इकरार न किया
उनसे कभी

(8)

शुभ लाल इ^१
रामी ई उक
लाल-प्राप्त

(11)

उमड़ पड़ा
सैलाब आंसुओं का
मेरी आंखों में

(12)

दी है आहट
खनकती चूँडियां
आमंत्रण की

(8)

शुभ शिव इ^१
सिंह नि प्राप्त शुभ
प्राप्तक-शिव

(13)

होती प्रतीक्षा
सुखद व रसीली
प्रेयसी की भी

(14)

प्यार का जन्म
होता सेक्स से और
सेक्स का प्यार

(8)

कि शाश्वत इ^१
कि डाकात शुभ
शुक्रल शुभ

(15)

तस्वीर तेरी
नयन में हमारे
कर तुम्हारे

(16)

अपना लिया
ओँखों में छुपाकर
तुमको आज

(17)

झलक उठा
बंद पलकों में भी
मस्त चेहरा

(25)

१ किए नशीली हि
टिर्णड जाए पहुँ
कि नशीले हैं

(18)

है भरी हुई
झोली में ही उसकी
खुशियां सारी

(19)

प्रभाव होता
मधुर धूप सदा
शीत काल की

(25)

इस लड़का
आमनीं कि परि
लड़क के लड़ाक

(20)

सघन छाया
तपती दुपहरी
आपकी हँसी

(25)

ठिठड़ि तिर
इंद्रिय के नशी
ठिकं शिरिया

(21)

जीता मनुष्य
करने को बहुत
इसी आशा में

(22)

देती राहत
हल्की सी मुस्कान व
शब्द प्यार के

(25)

उज्ज्ञि नि शिरि
कह छांग तिर
एशी के छुप

(23)

है याद आई
एक लम्हे पर
तुम्हारी छवि

(24)

गुल मुहर
खोंसो मत जूँड़े में
बहार बन

(25)

हो चिंतित क्यों ?
हर रात घनेरी
है जीवन की

(26)

छठ कलाह
मि मे किलम इं
उड़ान लास

(27)

बदल गई
प्रेम की परिभाषा
आज के वक्त

(28)

ज्ञांकता हुआ
गुलाबी मुखड़ा ही
था लुभावना

(29)

नहीं दीखती
दिल के आईने में
तस्वीर कैसी

(30)

उनकी बातें
मन में गुन-गुन
घुंघरूओं-सी

(31)

भोरों ने बेचा
अपने पंख तक
मधु के लिए

(32)

झाँड़ झाड़ ई
ज़ रिसू लौ
चिल शिक्कारू

(32)

स्वर अपना
बेचा है कोयल ने
सघन-वन

(33)

जब तुम ही
छाओगी घटा बन
वे क्या कहेंगे ?

(34)

आधृत इच्छियाँ
एक-एक के लिए
हैं फ़िल्हाल से

(35)

करना प्रेम
न कोई बुरी बात
है किसी से भी

(36)

है बुरी बात
किसी के प्रेम में ही
भटक जाना

(37)

मिलिए आप
मुस्कराते हुए
किसी से भी

(38)

रातें मधुर
मदमाते नयना
क्यों आप मौन ?

(39)

एक प्रेयसी
सावन-सा सुख
देती प्रेमी को

(40)

हृषक तांड़ल
फ़िल्हाल उकड़पी
कि फ़िल्हाल गार्ड

(40)

लेती हिलोरे

एक साथ मन में

तू साथ हो तो

(41)

बिखरा हुआ

सुष्टि के कण-कण

में सौंदर्य है

(42)

डि सु इच्छा

वा राह निकास

निकल राह

(43)

चुपके आई

प्रवेश कर गई

मेरे अधरों

(44)

नरे प्रश्न

जाव शृङ्ख द्वारा स

डि सि निती है

(45)

सुहानी भोर

पुलकित हो रहा

प्रेयसी-मन

(46)

प्राप्त एकीसी

पृष्ठ लालकाम

डि सि निती

(47)

वसंत कहाँ ?

मिलकर खोजना

होगा सबों को

(48)

निष्पर्द राष्ट्र

ज्ञान एवं ज्ञान

डि निष्पर्द निष्पर्द

(48)

प्रेम-कविता
तुम्हारे सान्निध्य में
हमने पढ़ी

(49)

रोम-रोम में
मखमली-उबाल
तुम्हारा ख्याल

(50)

उजास भरा है
जब तुमसे मिला
सच मानिए

(51)

प्राचीन शैली
जीवन्त बना देती
यादों को सदा

(52)

बयाँ करती
समृद्ध अतीत की
दास्ताँ खुद ही

(53)

बहती नदी
बदल जाती जैसी
मेरी प्रीति भी

(54)

झलक देखी
पहचान न पाया
छिप गई वो

(55)

छिप जाता है
आधी रात का चाँद
जैसे प्रीतम

के निश्चिप
तुम्ह कि इकर
नाम-शान्ति

ठिकि निश्चिप
के निश्चिप निष्ठि
निष्ठर इकर

(56)

कह गिए ही नाम
निष्ठि कि परि

(57)

झेझासि नाम
नाम के नाम
है प्रिय नाम

(56)

शराबी हँसी
चाँदनी की तरह
पर अस्पष्ट

(57)

प्रतिदिन के
प्रकाश की तरह
उल्लास-मन

(१५)

मि र्षि-मार्षि
लाल्ल-लिप्तिल
लाल्ल-लाल्ल

(58)

वह आएगी
रात के बाद, जैसे
भोर का चाँद

(१६)

लिंग लिंगार
लिंग लाल्ल-लाल्ल
लाल्ल कि लिंग

(59)

चिड़ियाँ लौटी
अपने घोंसले में
बच्चे प्रसन्न

(60)

जन्मजात हैं
सौन्दर्य भावनाएँ
सारे जन में

(१७)

लिंग लिंग
लिंग लिंग लिंग
लि लिंग लिंग

(61)

रोशनी देती
स्थान से आगे तक
प्रेम की ज्योति

(62)

सौन्दर्य बोध
होता, मन की एक
स्वतन्त्र क्रिया

(१८)

डि लाल्ल-लाल्ल
लाल्ल लक लाल्ल लिंग
लिंग लिंग

(63)

सच्चा सौन्दर्य
मानव के उदात्त
भावों, कर्मों में

(64)

सिखलाते हैं
हंसमुख प्रसून
जो हंस पाओ

(65)

उर-सौरभ
से, जग का आँगन
भी भर जाओ

(65)

हि मि शिल्प
तिरपि एड-एड
एक के आशा

(66)

सौन्दर्य-बोध
प्रक्रिया के कारण
सबकी सुष्ठि

(67)

प्यारी थी पर
पकड़ के बाहर
सदैव रही

(67)

हि दुक लिंक
एपिम्फ टान्स
स्ट्रू डि लिंक

(68)

है उपभोग
वासना का जागना
बस रस का

(69)

छलकता है
आनन्द का गागर
उपलब्धि में

(69)

एस ट्रान्सफरी
हि मि श्रृंग प्रैच
लूप एक लिंक

(70)

नाच रही है
पुतलियाँ दगों में
दो मधुकर

(71)

उड़ आए हैं
नभ-नलिनों पर
ये दो चिड़ियाँ

(71)

हिं एड
ट्रान्स-एप्लिक एड
हि लिंक

(72)
किस आशा से
किस पग-धूलि
ठटोल रहे

(73)
अधरों में ही
टप-टप गिरते
आशा के कण

(74)
सामैंद तक पहुँचे
मिथि जूँ फ़ि

(75)
चलता भावी
नयनों में सपने
हरियाली को

(76)
कौसे कहूँ मैं
अनन्त रमणीय
कौन हो तुम

(77)
प्रप फ़ि प्रिष्ठ
उडाउ के छक्का
दिए प्रिष्ठ

(77)
होना चाहिए
सहदय, भावुक
पाठकों को भी

(78)
खिलता सदा
उवर भूमि में ही
बिम्ब का फूल

(79)
तु ग़ज़क़रह
ज़मान तक इन्द्राई
मि ज़ीरुप्त

(79)
गगन-चित्र
खींचते नयन में
जलधि भी तो

(80)
उतर रही
वह सन्ध्या-सुंदरी
आसमान से

(81)
तु ग़ा़म छच
ज़रूरी-मन
ज़ैशीज़ि फ़ि इ

(80)

कुछ न हुआ
कुछ न होगा कभी
यदि तुम पास हो

(८४)

है निश्च ब्राह्म
जह कि जनिष्ठ
स्व निष्ठ

(81)

जैसे हम हैं
वैसे ही रहें हम
यही क्या कम ?

(88)

है तजी छाउ
प्रकृत्यामर्ग नाम
कि नाम इषि

(82)

बहते रहे
सुख के सागर में
तुम्हारे साथ

(८६)

है प्राण लषि
नृ न्यृ एक शिर
मर निष्ठ

(83)

सुख के दिन
भले ही डूब जायें
पर साथ हो

(१०)

प्रथम इष्ट
प्री-प्री प्रती
नाम निर्म

(84)

बाढ़ में बहे
मन सरलता के
जल-बिन्दु-सा

(११)

प्राम छण्डस
मै यै नै लै
नान्दीनि वै

(85)

माथे अबीर
गाल सिंदूरी दिखे
गुलाबी आँखें

(१२)

है निश्च ब्रह्म
ठक नानीमील
प्रमद नीकि

(86)

स्नेह निर्झर
सदैव बहता है
रेत ज्यों तन

(१३)

प्राम ब्राह्म है
एक नामी समर
कान्द्र निर्मी

(87)

याद आती है
अतीत की जब भी क
हंसते मन

(88)

मधु रु लकु

दि लाप स्तु शिं

(89)

छीन लेता है
नारी का गुप्त धन
सचित प्रेम

(90)

डृ रिडृ
प्राप्त के छम्
आप प्राप्तम्

(91)

लावण्य भार
एक मेरे उर में
मैं हूँ निश्चिंत

(92)

हुः मैं छाप
के प्राप्तम् त्वम्
त्वम्-दृष्टि-त्वम्

(93)

है याद आया
प्रथम मिलन का
भीगी पलकें

(94)

प्रसन्नि डर्नि
है प्राप्त वृक्ष
त्वम् फूल त्वम्

(18)

है लकु लिं

मृदु त्वं हि लिं
॒ लकु लकु लिं

(68)

त्वं के छम्
जाप लकु लिं
हि लाप प्रम्

(28)

प्रसिंह शिं
त्वं दृष्टि लाप
छाँस शिल्प

राष्ट्रीय चेतना



(१)

इस लिखित
कि छिप कि एक
विश्व इतन

(२)

हिं परिष्ठु
कि ऐप के शिराचाह
एकत्र इतन

(३)

एक प्रत्याहा

राष्ट्र चेतना

लिमिटेड एंड लिमिटेड

मामिंद मध्य

(४)

लिए है मैं
कि प्रातः कि लिए
ज्ञान ज्ञान

चेतना भरो
भर सको अगर
तो जनता में
लग ज्ञान हि

राष्ट्र चेतना

(1)

सींचती सदा
देश की जड़ों को ही
राष्ट्र चेतना

(2)

चौराहे पर
खड़ा है राष्ट्र आज
अनिर्णय के

(3)

धुँधली पड़ी
आजादी के पूर्व की
राष्ट्र चेतना

(4)

गुजर रहा
संकट-दौर से
राष्ट्र हमारा

(5)

खो चुके हैं
राष्ट्रीय स्वाभिमान
हम अपना

(6)

धर्म व जाति
सभी से ऊपर है
अपना राष्ट्र

(7)

कशिश एक
आज भी मेरे मन
हों राष्ट्र एक

(8)

क्षरण हुई

तक हम में इच्छाशक्ति
आजादी बाद

(9)

ज्यादा खतरा
राष्ट्रीय एकता को
जातिवाद से

(10)

एक राजनीति
तक ऐतिहासिक विभिन्नी
हिंसा का कानून

(10)

है छिन्न भिन्न
सामाजिक ताना ही
जातिवाद से

(11)

हो मतदान
राष्ट्रीय एकता के लिए
समझकर

(11)

प्रश्नाएँ हैं
जातिवाद के लिए
उम्मीदें

(12)

गुण-दोषों का
विवेचन हो आज
प्रत्याशियों के

(12)

१। उम्मीदें हैं
जातिवाद के लिए
हिंसा नियम

(13)

लोलुप नेता
न उभरने देता
राष्ट्रीयता भी

(13)

आखिर आप
भी कबतक सहेंगे
चुप्पी तोड़िए

(13)

१। उम्मीदें हैं
जातिवाद के लिए
हिंसा नियम

(14)

परिवर्तन
के लिए तटस्थता
छोड़नी होगी

(14)

सामाजिक अल्प
मिल लिया जाए
प्राचीन संघ

(16)

ताकत से ही
राष्ट्र विरोधियों का
मुकाबला हो

(17)

सामना करें
विदेशी शक्तियों का
दृढ़ता से ही

(8)

एशिया प्राप्त
कि लक्ष्य प्रशिक्षण
मि शास्त्रीय

(9) (18)

कुशल नहीं
भारत की नाव का
नाविक कभी

(11)

प्राणी के लक्ष्य प्रशिक्षण
एकलमस्तु

(19)

है जरूरत
देश को संभालना
साधन-भरा

(20)

काफी बाधक
देश में जातिवाद
विकास-मार्ग

(6)

एकलमस्तु
कर्तव्य प्रशिक्षण
मि ताजियाएँ

(21)

कहाँ जा रहा ?
भारत सुनहरा
अगली सदी

(22)

देश के पास
है बॉटने के लिए
कुछ न आज

(7)

प्राणी के
कर्तव्य प्रशिक्षण
मि ताजियाएँ

(23)

जरूरी आज
तटस्थ राष्ट्रों को भी
ठोस आधार

(24)

है जरूरत
आज भी जगाने की
सुप्त चेतना

(25)

है थक चुका
दुनौतियाँ अनेक
नेतृत्व आज

(26)

प्राप्ति तु प्राप्ति है
सुख-हास्य-शाश्वत
१ त्रिप्ल प्राप्ति कि

(27)

है कह रही
सब कुछ जनता
दबी जुबान

(28)

है अच्छी नहीं
आज भारत की भी
आर्थिक दशा

(29)

आज भारत
भुगत रहा सजा
अन्तर्विरोध

(30)

प्राप्ति प्राप्ति
त्रिप्ल प्राप्ति हेत्कि
कि लड़ियाँ

(31)

वही सवाल
जनता के सामने
क्या हो राष्ट्र का ?

(32)

प्राप्ति प्राप्ति
प्राप्ति त्रिप्ल प्राप्ति
प्राप्ति कि प्राप्ति

(32)

फिदा होना हो
तो होइए पहले
राष्ट्र पर ही

(33)

है क्या हो गया
राष्ट्रभक्ति-लहर
को आज यहाँ ?

(25)

राष्ट्र काः उ
राज्ञेऽप्तिर्विष्टु
चाह राष्ट्र

(34)

यह सवाल
खुद से पूछें आप
हैं राष्ट्र कहाँ ?

(26)

हिष्ठ रक्त उ
सान्ध देहु भृ
ताष्टु इष्ट

(35)

राष्ट्र चेतना
बस प्राणशक्ति है
इसे जानिए

(36)

हो रही लुप्त
हमारे हृदय से
राष्ट्र चेतना

(27)

ताष्टम चाप्त
प्राप्त इष्ट ताष्टु
अप्तिर्विष्ट

(37)

व्यवहार से
कोई बाधा नहीं हो
राष्ट्रहित को

(38)

बनती सदा
पहचान हमारी
राष्ट्रीयता से

(28)

ताष्टम इष्ट
प्रिष्ट र्वा ताष्टम
६ लक्ष्मण इष्ट ताष्ट

(39)

विचारें आज
क्या कर रहे आप
देश के लिए

(40)

खड़ा सवाल
है देश के सामने
स्थिरता का भी

(41)

हास कितना
राष्ट्रीय भावना का
आज हो रहा

(42)

के मिछ प्रभावी
मिहु हूँ आप प्रभ
९ जाह शिखाए

(43)

पनपा नहीं
नेह सद्भावना का
आजादी-बाद !

(44)

लड़खड़ाती
एकता, अखंडता
इस राष्ट्र की

(45)

जरूरत है
हमें नव निर्माण की
स्व रक्षार्थ भी

(46)

क्यों निरादर ?
आज नर-नारी का
इस राष्ट्र में

(47)

होगा उठाना
स्वतंत्र भारत का
नैतिक स्तर

(48)

के लिकी है कि
शिखाए कि राष्ट्र
डिए के लिए

(48)

स्मरण करें
कर्ण का पराक्रम
इस देश में

(49)

सिवा खोने के
क्या पाया है हमने
आजादी बाद ?

(48)

अनुकूली साइ
एक सम्भास एवं शिष्ट
सुख ही पाया

(50)

अग्रणी रहे
राष्ट्रीयता चेतना में
हिन्दी प्रदेश

(51)

करना हमें
नया चिंतन आज
नए तरीके से

(51)

भिल ग्राम्य
एक सम्भास एवं शिष्ट
। शाह-जिलायाद

(52)

सिर्फ करना
प्यार मातृभूमि से
है काफी नहीं

(52)

डैन डिलाउ
कि जिलायी छान रिह
गिर जिलायी छान

(53)

दीजिए जोर
कथनी से अधिक
करनी पर

(53)

समझाना है
एक दूसरे को प्रेम से
बात अपनी

(54)

दी है किसी ने
भारत को आजादी
भीख में नहीं

(54)

जानकर गार्ड
एक सम्भास एवं शिष्ट
प्राय रक्तीर्ण

(56)

मातृभूमि के

स्पर्श रजकण का
है देशभवित

(57)

कहाँ गए वे
आदर्श व संकल्प
जो थे देश के

(58)

प्रिंड-प्राची
कि जिंदा इन्हीं
मातृभूमि के

(59)

जुटना होगा
राष्ट्रीयता के लिए
प्राणपण से

(60)

मायान निक
कि यह जिंदा हिंद
कि ऐड मह

(61)

एक लिपि का
राष्ट्रीय एकता में
प्रबल दान

(62)

ई आनंद
कि पिंड कि प्रहिक
मायान-काल

(63)

कारगर था
गाँधी का आन्दोलन
भारत छोड़ो

(64)

प्रादुर्भाव
निरामयी प्रियंक
मायान तद्द

(64)

कौन सुनता
अब गांधी की बात
इस जहाँ में

(65)

दीवार-टंगी
तस्वीर गांधी की
सिर्फ दिखावा

(८८)

हि ग्राम छिक
छल्लाएँ हि डिशाएँ
हि इड़े हि तिह

(66)

सही पथ के
पथिक आज कहाँ
इस देश में

(६७)

कौन लाएगा
सही रास्ते पर भी
इस देश को

(६८)

प्राप्ति-फ़्रान्ति
एची के रास्ते डिया
हि घणाणप्र

(68)

जगाना हमें
भारत के लोगों में
जन-चेतना

(६९)

पहुंचाना है
कबीर की वाणी को
लोक-मानस

एक चिठ्ठी का
हि फ़्रान्ति फ़्रियाएँ
साफ़ रुक्षर

(70)

हमें बुलाते
हमारी जिन्दगी के
सच अक्सर

(७१)

बहता हुआ
हमारी जिंदगानी
इक दरिया

हि फ़्रान्ति एक खिँड़ी
डिस्ट्रिक्ट नशा

(72)

नहीं मालूम

सच को क्या कहते
इस देश में ?

(७३)

झाँसि गिराव

जिन्हे न छाप

के रुप से प्र

(73)

लालसा लगी

मगध की मिट्टी से
जुड़ने की ही

(०८)

के पांडी आंधी

तरांग तिप्पु
झाँसि निप्प

(74)

सामने खड़ा

भारत के समक्ष
यक्ष्य-प्रश्न है

(१८)

तिरांग लांप

तिप्प तिरांग शीर
कि एमना

(75)

मूल्य-आदर्श

को सभी सराहते
हिन्दुस्तान में

(५८)

तक साम-झाँ

मानव झाँझ
हिन्दु झाँसि

(76)

करता रहा

अन्याय के खिलाफ
शंख-नाद में

(६४)

तारि रहि र

न्याय र शीर
तारि-नामू

(77)

गोली बंदूक

सत्यमेव जयते
के स्थान पर

(५८)

पुनीस साम

तामू तक-ताकि
हु लिंग साम

(78)

आजादी दूंगा

तुम मुझे खून दो
वाणी नेताजी

(२४)

तास तिक

ताजासं-ताजास
हु लिंग उप

(79)

आजादी आई

भारत के बस्ते में

पर सस्ते में

(८०)

मुश्किल हिंड

में जल गए हैं तो रहने

के लिए उड़ाने की

(80)

बिना हिंसा के

अपनी स्वतंत्रता के लिए

हमने पाई

(८१)

मिल समझाया

कि हिंडी कि जापा

विकि निष्ठा

(81)

पोल खोलते

यदि बोलते पक्षी

जनगण की

(८२)

उड़ाने की साथ

जलने की जागा

है चौर-चौर

(82)

हाड़-मास का

व्यक्ति, महात्मा गांधी

क्या पैदा हुआ ?

(८३)

डिग्गा-ड्गु

मिल समझाया

कि निष्ठा

(83)

न तन सेवा

और न धन सेवा

भुवन-सेवा

(८३)

उड़ाने का

प्राणी का प्राण

है चौर-चौर

(84)

आप मानिए

जीवन का दूसरा

नाम गति है

(८४)

कड़क डिग्गा

मिल समझाया

कि निष्ठा

(85)

करती सदा

समाज-संचालन

वह गति है

(८५)

मान्डु जिम्माह

कि निष्ठा

मिल समझाया



वेदना

दुनिया सारी
दुःख दर्द भरी है
चलो संभल

वेदना

(1)

घायल मन
जाने कैसी खुशियाँ
हैं अश्रु भरे

(2)

व्यथित तन
कैसे सुनायें आज
गीत नयन

(3)

गुनगुनाएँ
लेकर आंसुओं को
ही नयन में

(4)

गिड़गिड़ाएँ
रो कर सौ-सौ बार
पर बेकार

(5)

हारा हुआ
पथित पथ पर
डगमगाता

(6)

मिलता नहीं
कोई इस जहाँ में
जो दुःख बांटे

(7)

अश्रुधार
रुक न नयन के
चाहकर भी

(8)
है चली गयी
वह नींद चुराकर
चुपके से ही

(9)
है देती गयी
साथ-साथ जाने के
एक आह भी

(10)
है चली गयी
वह प्यास जगाकर
हमराही भी

(11)
क्यों फेंक दिया
दर्द के सागर में
मुझे आपने

(12)
है आपस तकि बाई
तानबाई बाई

(13)
समेट रहा
यादें बिखरी हुई
हारकर ही

(14)
है आपस किलकी
तानबाई बाई

(14)
ज्यों-ज्यों दवा की
दर्द बढ़ता गया
अब क्या करें ?

(15)
आंगन-सूना
सब कुछ है बस
आपके बिना

(15)
है आपस किलकी
तानबाई बाई

(16)

कांपते दीप
आंगन बरसात
तुम अनोखे

(17)

तट पे बैठे
हो मौन आज तुम
आस किसकी !

(18)

गया वापस
वह नाव अपनी
आँसू नयन

(19)

वह सपना
अब बीत गया है
जो था सुहाना

(9)

प्रिया फिर है
के लिए खान-खाल
फि डाल लए

(20)

जग जाएँगी
देखकर आपको
यादें पुरानी

(11)

प्रिया कल्प छिक
में वापस के छेद
निमाई द्या

(21)

मालूम नहीं
किसकी तलाश में
कब निकला ?

(6)

इह इष्टिनी इमाल
दि प्रकाश

(22)

कि नहीं जलेंगे
चिराग कोठियों के
अनवरत

(5)

प्राप्त न-साध
लह डै लहु शर
पानी लाप्त

(23)

जी रहे हम
भरोसे कल के ही
सच मानिए

(24)

प्राप्त न-साध
लह डै लहु शर
पानी लाप्त

(24)

हो रहा आज
कि चांदी के उजाले
हर कुकमूर्छ

(25)

नायक खड़े
मुखौटा है पहने
खलनायक

(26)

पहचान हुए
पुत्राव शक्ति
हेह तक नहीं

(26)

करते चोट
सीधे ही अन्तर्मन
ताने आपके

(27)

होता असर
नई बहुओं पर
सास का ताना

(28)

किट्ठु ति छाए
शकालाच कि मंझ
गाए कि माँ

(28)

घटता जाता
प्रेम व मादकता
शादी के बाद

(29)

पढ़ना चाहा
उदास जिंदगी को
पढ़ न पाया

(29)

पृष्ठु छाए
मि छालू के माँ
पृष्ठु छाउ

(30)

दिल चाहता
गम के लमहों में
हंसने को भी

(31)

पता नहीं क्यों ?
खुशी के मौके पर
रोना चाहता

(31)

तहकणिकाए
लिलिष्ण डि तिछ
मि छू छाए

(32)
हैं झलकती
लकीरें उदासी की
चेहरे पर

(33)
रहा उत्तर
बनकर जहर
दिल का दर्द

(टृ)
झलकती
लकीरें उदासी
लासान्दर्द

(34)
रोने से नहीं
जीवन की समस्या
सुलझाने से

(35)
राख हो चुकी
स्वयं को जलाकर
गम की आग

(३३)
राख हो चुकी
प्रपाँड़कृष्ण इन
गम रक्त साम

(36)
सिमट आए
थे तमाम फासले
मेरे दर्द के

(37)
गहरे हुए
गम के बादल भी
चेहरे पर

(३५)
गहरे हुए
कि रिकांजि मारुद
आप हैं

(38)
अगरबत्ती
सुलगे व महके
औ बुझ गए

(39)
वास्तविकता
होती है पथरीली
और दूर भी

(१४)
प्रिय डिन रात
प्रपाँड़कृष्ण के शिष्य
महाराज साम

(40)

न पढ़ पाया
उदास चेहरों को
कोशिश तो की

(41)

भींजता गया
रेगिस्तान धूप-सा
तुम्हारा दद

(42)

हिकी प्रान्त
इफ इफ के प्रियों
हिं निमिषाम

(43)

सहता रहा
जेर की नदियों-सा
विरह-दद

(44)

नीर पिलाया
तू ने आखिर तक
पर क्या पाया ?

६ छुक लाजार है
कुँस लार मै लाची
ल लार लड़ु

(45)

जठे ऊपर
दर्द भावनाओं के
सीने लेकर

(46)

पिया करते
वे कटाक्षों को सदा
अमृत-सा ही

लाजार लार
लाजार लार है
ल-लौधु-लौधु

(47)

दूटा हुआ हूँ
चन्दन का टुकड़ा
फिर भी हूँ मैं

(48)

है देती गयी
जाने के साथ-साथ
एक आह भी

लामौर-एर
लान्स प्रेस्नर लाली
६ लिंग लिंग लाल

(48)

अबकी बेर

तुम कहाँ मिलोगे ?

ओ चित्तचोर !

(49)

सुनाएं किसे
लोरी के स्वर वह
अभागिनी जो

(50)

आज रात्रि
इस-एउ-सात्रपिंड
इह आङ्गृहि

(51)

है रास्ता कहाँ ?
जिस पे जा सकूँ मैं
दूटे मन से

(52)

लगेगा वक्त
सूखने में आँसू के
घाव गहरा

(53)

मन उदास
है गगन उदास
धुआँ-धुआँ-सा

(54)

मुरझा गई
सुनकर बात वो
मनाइए तो !

(55)

घर-आँगन
बिन तुम्हारे सूना
आते नहीं क्यों ?

(56)

जिस निक है
आँस-आँस के निक
निक डाई करूँ

(56)

तान मिला दे
मेरी धड़कन में
धड़कन से

(57)

गए बिखर
दूटे घुंघरूओं से
सारे सपने

(58)

कैसे जोड़ूँ मैं
सपनों की डोर को
जो टूट गई

(59)

गले का हार
बन गया है आज
मौत का फंदा

(60)

नहीं मिलता
सभी को सबकुछ
कोशिशों बाद

(61)

किस-किस से
कहूँ व्यथा अपनी
कथा-पुरानी

(62)

कौन सुनेगा ?
इस आपाधापी में
व्यथा हमारी

(63)

दुःखी लोगों को
लगता है दिन भी
अमावस-सा

(64)

हूँ चिल्हण
हि भेष के निष्ठा
के लाल लाल

(64)

होता कठिन
लमहा जिंदगी का
विधवाओं के

(65)

होते न लोग
संकट कितने हों
स्पंदित आज

(६३)

प्रज्ञाति प्राप्त
कि शिलप्रभु उड़ा
कि प्रज्ञन प्राप्त

(66)

जीते हैं हम
छोटे दायरे में ही
आत्म मोह के

(६८)

श्राव तक लिए
लाइ हैं प्राप्त तक
इन्हें तक लाइ

(67)

भुलाया मैंने
उम्र के खरोश में
आप सभी को

(68)

घूमते रहे
उदास चेहरे ही
मेरी आँखों में

(६९)

कुरेदती हैं
सदा मेरे मन को
यादें धुंधली

कि उक्ती-उक्ती
लिपाई गाड़ त्रैल
निष्ठा-गाड़

(70)

आतीं नहीं
कहकर कभी भी
परेशानियाँ

(७१)

मुरझाते हैं
गूंथने के पूर्व ही
फूल माला के

कि गाँव छिह्न
कि उक्ती है गान्ध
प्राय-गान्धारा

(72)

न हों मायूस
शाम के ढलने से
होगी सुबह

(73)

तपती धूप
कहती कुछ नहीं
दुपहरी में

(18)

हिप निकहू
तमसि हिप हिप
प्रति का छज्जनी

(74)

झेलूं कैसे मैं
मृत्युजन्य शोक को
है प्रश्न आज

(75)

शिकायत है
आपकी जायज ही
लाचार हूँ मैं

(58)

हिप हि चाकड़
हि डि तामड़ि प्रा
! हि हिप हिप

(76)

तस्वीर तेरी
कै है हमेशा समायी
मेरे दिल में

(77)

सब कुछ है
तुम्हारा ही आज भी
टूट के बाद

(28)

तकस न मुङ्ग
मि ज्ञान का इश्वार
मि पान राम

(78)

भींगता गया
रेगिस्तानी धूप-सा
तुम्हारा दद

(79)

सब चूर हैं
जो देखे थे सपने
सारे हमने !

(३८)

पानकरी डिन
मि ईरा ज्ञान मरी
मौजनरी डिन

(80)

मेल मिलाप
अरसों का आपसे
छिन गायब !

(81)

चुकानी पड़ी
मुझे बड़ी कीमत
निष्ठा के लिए

(82)

है मीत कहाँ
बचा सके आज जो
यौवन-भार !

(83)

इलाज ही क्यों
गर बीमार ही न
मानें उसे तो !

(84)

देती रहेंगी
आप भी कबतक
कोरी तसल्ली

(85)

हंस न सका
कोशिश के बाद भी
तप्त ताप से

(86)

तलाशता हूँ
उदास चेहरे में
सपने तेरे

(87)

नहीं ठिकाना
किस ओर मुड़ेगी
मेरी जिन्दगी

(88)

बनाए रखें
खुद को उपयोगी
और ग्राह्य

(89)

किसे कहूँ मैं
मैं खुद खो गया हूँ
किसी याद में

(90)

सिन्धार पांड
पंजीयन हिक्क
पश्चि के डिल

(90)

एक परिन्दा
घोंसला बना डाला
मेरी आँख में

(91)

सभी मनुष्य
अकेले ही अकेले
आते व जाते

(92)

बोता है कोई
पर काटता कोई
दूसरा ही है

(93)

सुखी संसार
फिर भी दीख रहे
दुखिया सारे

(94)

इन्हीं वै प्राप्ति तिक
पर तिक लाइ

(94)

रास्ते हैं कई
दिशाएं दब गई
थके हैं लोग

(95)

व्यथा कहती
विधवा अभागिन
खुद दिल की

(95)

उद्ध प्राप्ति
कि तिक निपट
निहि फैल

(96)
दुःखी बढ़ते
जिज्ञासु नजरों से
प्रवेश-द्वार

(97)
अंधा आदमी
पकड़े अंगुलियाँ
रोटी के लिए

(98)
मैं हँसक मिली
जाऊँ तो इहुँ है
जाऊँ तो मिली

(99)
पैरों के बल
मकड़े बुनते हैं
मकड़ी-जाल

(100)
उसका शब्द
मुझे भी बार-बार
खटक रहा

(101)
मृगों मिल
लंकास हि लंकास
ताजे छ ताजे

(101)
कहाँ सुनता
क्यों रो रहा है कोई
आज कहीं पे

(102)
प्राप्ति छिप्प
उष छाड़ि फि उत्तो
शास पछीछूँ

(103)
संजोए रहा
अपने सपनों को
सदैव मैंने

(104)
लिहक ग्राम
लगिलग लगड़ी
फि लड़ी लड़ू

(१०४)

कितने सहेज
आह तक निकली
कहाँ घात के ?

(१०५)

दो लाशें पड़ीं
मनहूस सुबह
रोज की भाँति

(१०६)

हाँड आपली
शालकीम इच्छा
पर्ही के लाल

(१०६)

अपनी व्यथा
अन्तर्मन की कथा
किसे सुनाऊँ ?

(१०७)

छिपी लालसा
हमारे नयनों से
आना चाहती

(१०७)

हिं हिं गुरु
के गिरफ्त प्रत हि
गिरफ्त इरु

(१०८)

बढ़ता रहा
तमस का हृदय
चीरकर मैं क

(१०९)

पलते रहे
स्वप्न भी आगत के
आँखों में सदा

(१११)

हुं हुं गुरु
के गिरफ्त कि गिरफ्त
गिरफ्त श्राव

(११०)

मानव सदा
खोजता ही रहा है
मुकित का पथ

(१११)

काम है ये भी
पथर तराशना
नाली खोदना

(१११)

हुं हुं गुरु
गुरु प्रती किराम
मि करु लाल

(112)

झारिया आज

बैठा है आग के ही

दरिया पर

(113)

निराश होते

बच्चे व महिलाएँ

आज के दौर

(201)

ठिक़ आज़ छ

हछहु सवानम

प्रीति कि ठिक़

(114)

ले जा रहे हैं

खुशियों भरा दिन

अपने साथ

(201)

परकार किसी

दि निष्कर्ष शाहू

किछाज गुण

(115)

हत्या हो रही

है नए स्वज्ञों के

रोज ब रोज

(201)

दरकार किसी

दि निष्कर्ष शाहू

किछाज गुण

(116)

दमन होता

नई-नई इच्छाओं

के एक दिन

(201)

दृष्टि तिलम

के गामधि कि स्वाज

तिल मे छिपौ

(117)

जा रहे हैं

हत्यारों की झोली में

सारे उत्सव

(201)

के गामधि कि स्वाज

तिल मे छिपौ

(118)

एक सपना

अपना ही हो एक

घर अपना

(119)

कि छ है साक

तिलाजन शाहू

किछाज गुण

(119)

अधूरा ही है

सबके लिए घर

आज तक भी

(120) ~

अलग दर्द छाप
होता है, किराए के
मकान में भी

(121)

इस युग में
संवेदनाएँ कहाँ ?
मुद्रा प्रधान

(121)

है शिक्षक
मृत्यु सी शिक्षणी
पृथी प्रश्न

(122)

सुविधा कम छान
मकान-किराएँ का
किराया ज्यादा

(123)

भवंर आए
और साथ ले जाए
युग दो युग

शिवाय ताण
सि-माण इनु किं
साम शिवाय

(124)

पार कराना छर्ह
बनकर छतरी
भटकूँ राह

(125)

क्यों न खाते
जीवन से भी मेल
मेरे सपने

प्राप्ति अप्स
सि उच्च डि अच्च छि
तक छिनीपास

(126)

छूट जाता है
सपनों में भी दूर
मेरा जीवन

(127)

एक तरफा
कभी नहीं चलता
किसी का प्यार

के बाहर छर्ह
सह मि बाप्पाम
डिर ठारपी

(128)

याद करता रहा
कि तुम्हें हर वक्त मैं
तकलीफ में

(129)

कड़कती है
बिजली, सिमटूँ में
तुम्हारे लिए

(130)

मैं इष्ट इष्ट
छिक प्रान्तिक
सामर इष्ट

(130)

तड़प जाती
देखते ही चाँद को
आसमान में

(131)

आना चाहती
थकी हुई शाम-सी
तुम्हारे पास

शाम उठा
शाम नि उठा
मृग नि मृग

(132)

वेदना सहौँ
अपने हृदय में
दुर्भाग्य वश

(133)

रंग अपना
खो रहा है रक्त भी
धमनियों का

निष्ठ नि निष्ठ
लभ नि नि निष्ठि
निष्ठ नि निष्ठ

(134)

किसे सुनाऊँ
व्यथाएँ मैं अपनी
सब बहरे

(135)

हर वाद के
अपवाद में हम
पिसते रहे

लप्पन लप्प
लक्षण उप निक
प्राप्त एक निकी

(१३६)

द्वेष व घृणा

हँस रहे हमारी

मुख्ता पर

(१३७)

अनैतिकता

आज नैतिक कार्य

समझा जाता

(२१)

कुपड़िये

प्राप्त कोई न

नहीं-कोई नहीं

(१३८)

ऐसा लगता

मानवता का बीज

चला हिन्द से

(१३९)

बदल गए

पैमाने यहाँ सब

नैतिकता के

(२१)

विश्वासी नहीं

को ठक्कर एक छात्र

छात्र छप्पा

(१४०)

आतंकवाद

को बरसते शोले

लगते भोले

(१४१)

धोयी जाती है

सदा आंसुओं से

दिल की मैल

(११)

हाय ही डिक

कि प्राइसर शिवाय

महु न प्राप्त

(१४२)

दो-चार पल

वह जीया करती

इंतजार में

(१४३)

दिल भी भारी

संजीदगी जिंदगी

आँखें नम हैं

(११)

कि चमीजमीठ

कि लकड़ी लस्साठ

लकड़ायाठ

(144)

देखता रहा
बीते हुए वर्ष को
कौतूहल से

(145)

ईश्वर करे
न कोई वर्ष आए
बीते वर्ष-सा

(146)

किसे सुनाऊँ
करुणा की कहानी
हम अपनी

(147)

होता विरोधी
सत्य का एकता का
खण्ड सर्वदा

(148)

जानता हूँ मैं
रात फिर आएगी
भोर से डरता

(149)

कटी है रात
तुम्हारी प्रतीक्षा में
आए न तुम

(150)

अकेली राह
सूनी-सूनी डगर
विधवा जैसी

(151)

अभिव्यक्ति है
असीम वेदना की
ताजमहल

(152)

मूक वेदना
ताज के निर्माण में
व्यक्त हुई है

(153)

दिखाई दिए
और जुदा कर चले
हमें आप से

(154)

एक विरही
अनुभूति विदग्ध
स्वयं पीड़ा की

(155)

दूर की कौड़ी
लाने की व्यर्थ चेष्टा
सृष्टि नहीं है

(156)

सीख न पाया
अपनाना दुःख को
सुख से कभी

(157)

जल जाती हैं
अंध-भावनाएं भी
विद्रोह से ही

(158)

गीत गाने दो
मुझे भी वेदना के
न रोको कभी

(159)

सूखी दिखी जो
आम की वह डाल
कहानी कही



पर्यावरण

(रटा) कि नियंत्रित
के समर्थन के लिए
द्वितीय विधुत के
प्रभावित है
भारत की आबादी
प्रदूषण से
लाभ नहीं किया जाता
हिक्के नियंत्रित

पर्यावरण

प्र० शशांक

जी०-इ० प्रा०

प्र० राजेश्वर

(1)

बरसे मेघ

(2)

रेगिस्तान में आज
जंगल कहाँ ?

द्वाक्षर इक

(2)

खोजते आज
आदमी के जंगल
याचक वृक्ष

(3)

एक ही रास्ता

प्र० शशांक

प्रदूषण-मुक्ति का
जागे जनता

जी० राजेश्वर

(4)

क्यों-प्रदूषित
अनुपमा धरा ही
आज हो रही

(5)

होगा बचाना
प्रकृति अनुपम
आज हमें ही

प्र० राजेश्वर

प्र० रामार्थिनी

प्र० रामि प० शशांक

(6)

प्रा० शशांक
महत्व बहुत
नाभिकीय उर्जा का
विकास-क्रम

(7)

बरामदे में

लगाएं पेड़-पौधे

फुरसत में

(1)

(8)

करें सफाई

गर काम न कोई

खुद घर में

(9)

है बढ़ रहा

बहरेपन-ओर

बढ़ता शोर

(10)

रिस रहा है

कल-कारखानों से

आज जहर

(11)

बढ़ रहा है

जहरीलापन भी

वायु में तीव्र !

(12)

होड़ लगाए

प्रदूषण फैलाने

में प्रतिष्ठान

पतझर की साँझा

सिद्धेश्वर जी के हाइकु मुझे पढ़ने को मिले। इनके विषयों की विविधता है और आज के समाज के विविध प्रश्नों को हाइकु की विधा में उतारा है। साहित्य, संस्कृति, शृंगार, राष्ट्र-चेतना, पर्यावरण को जहाँ इन्होंने अपना विषय बनाया है वहीं वेदना पर भी बड़े मार्मिक ढंग से अपने भावों को इन्होंने अभिव्यक्त किया है —

व्यथित मन	क्यों फेंक दिया	नहीं जलेंगे
कैसे सुनायें आज	दर्द के सागर में	चिराग कोठियों के
गीत नयन	मुझे आपने	अनवरत

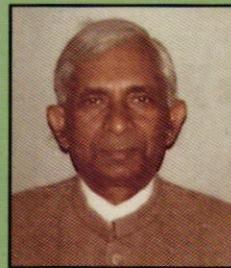
साथ ही प्रकृति-चित्रों का समावेश भी सिद्धेश्वर जी ने अपनी हाइकु कविताओं में बखूबी किया है। जहाँ वे केवल भाव अथवा प्रकृति-सौन्दर्य को विषय के रूप में लेते हैं वहाँ उन्होंने कुछ अच्छे हाइकु दिए हैं, यथा—

मचल रही	गा रहे लोग	तपती धूप
चाँदनी भी रात की	लहरों के ताल में	तरसती पानी को
सागर-तले	प्रकृति-राग	रेगिस्तान में

इनकी ओजपूर्ण भाषा में रचित हाइकु की यह काव्य-कृति आधुनिक सामाजिक-साहित्यिक संदर्भों में भी सर्वथा प्रासंगिक एवं सार्थक है। इस कृति में मानवीय मूल्यों-मर्यादाओं के स्खलन के विरुद्ध जन-मानस में संघर्ष-चेतना जागृत करने का संदेश है। कवि ने पूरी ईमानदारी के साथ समसामयिक स्थितियों को निरूपित किया है। हाइकु के प्रति सिद्धेश्वर जी की रुचि प्रशंसनीय है।

विश्वास है इस कृति का हिन्दी जगत में सर्वत्र स्वागत होगा।

सत्यभूषण वर्म
जापानी भाषा विभाग
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली



सिद्धेश्वर

पूरा नाम	: सिद्धेश्वर प्रसाद
संक्षिप्त	: सिद्धेश्वर
जन्म तिथि	: 18 मई, 1941
जन्म स्थान	: ग्राम+पत्रा-बसनियावाँ, जिला- नालन्दा (बिहार)
शैक्षणिक योग्यता	: 1962 में एम.ए., पटना विश्वविद्यालय
तकनीकी योग्यता	: 1973 में भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की एस.ए.एस. परीक्षा उत्तीर्ण
अभिरुचि	: सामाजिक-साहित्यिक गतिविधियों से गहरा लगाव, पत्र-पत्रिकाओं का संपादन-संयोजन
लेखन	: कविता, कहानी, निबन्ध, संस्मरण एवं साहित्यिक रिपोर्टज आदि विधाओं में अनवरत लेखन तथा राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से रचनाएं प्रसारित।
प्रकाशित कृतियाँ	: कल हमारा है, आरक्षण, बिहार के कुर्मी (निबन्ध-संग्रह), बिहार के कुर्मी (निदेशिका), पतझर की सांझ (हाइकु कविताओं का संग्रह)
प्रकाश्य कृतियाँ	: भींगी धरती देती सुगन्ध, भींगी पलकें (सैन्यू कविताओं का संग्रह)
संपादन	: राष्ट्रीय विचार पत्रिका, विभागीय पत्रिका-'प्रहरी', 'यादें' (काव्य-संकलन)
सम्प्रति	: वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी, कार्यालय-महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-1, बिहार, पटना, महासचिव राष्ट्रीय विचार मंच, प्रधान संपादक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका', सदस्य, रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति, रेल मंत्रालय, नई दिल्ली।
स्थाई पता	: 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001 (बिहार) दूरभाष : 0612-228519

...